शान्ति की कहानियाँ

कहानी 1

दुनिया कैसे बनी

शुरूआत में सिर्फ परमेश्वर ही था। उस ने सब कुछ बनाया। वह बोला और सब कुछ बन गया। उसके बोलने से सूरज, चाँद, तारे, ज़मीन, पानी, जानवर सब बन गए। फिर उसने अपनी सब से ख़ास चीज़ बनाई, जो इन्सान था। परमेश्वर ने इन्सान को अपने जैसा बनाया। परमेश्वर ने इन्सान को मिट्टी से बनाया और उसमें साँस डाली। और वह ज़िन्दा हो गया। पहले आदमी का नाम आदम था। परमेश्वर ने देखा कि जो कुछ भी उसने बनाया है वह सब अच्छा है।

परमेश्वर ने आदम को एक बहुत ही सुन्दर बाग में रखा। वहाँ पर हर किस्म के फलों के पेड़ थे। परमेश्वर ने आदम से कहा "तुम हर पेड़ का फल खा सकते हो। मगर तुम एक पेड़ का फल नहीं खा सकते जो भले और बुरे की समझ देने वाला पेड़ है। अगर तुम इस पेड़ का फल खाओगे तो तुम ज़रूर मर जाओगे।"

तब परमेश्वर ने सोचा कि आदम का अकेला रहना ठीक नहीं है। तो परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुला दिया। और उसकी एक पसली निकालकर एक औरत बनाई। जब परमेश्वर औरत को आदम के पास लाया तब आदम उसे देख कर बहुत खुश हो गया क्योंकि वह बिल्कुल आदम जैसी थी। फिर आदम ने उस औरत का नाम हव्वा रखा। तब परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी और उन्हें उन सब चीज़ों का अधिकार दिया जो बाग में थी।

आदम और हव्वा का रिश्ता परमेश्वर के साथ अच्छा था। वे परमेश्वर के साथ बोलते और चलते थे। वे कपड़े नहीं पहनते थे पर वे शर्माते नहीं थे।

परमेश्वर ने यह सब कुछ छ: दिनों में बनाया। उसने देखा कि सब कुछ अच्छा है और सातवाँ दिन एक ख़ास दिन ठहराया। और उस दिन परमेश्वर ने आराम किया।

कहानी
1

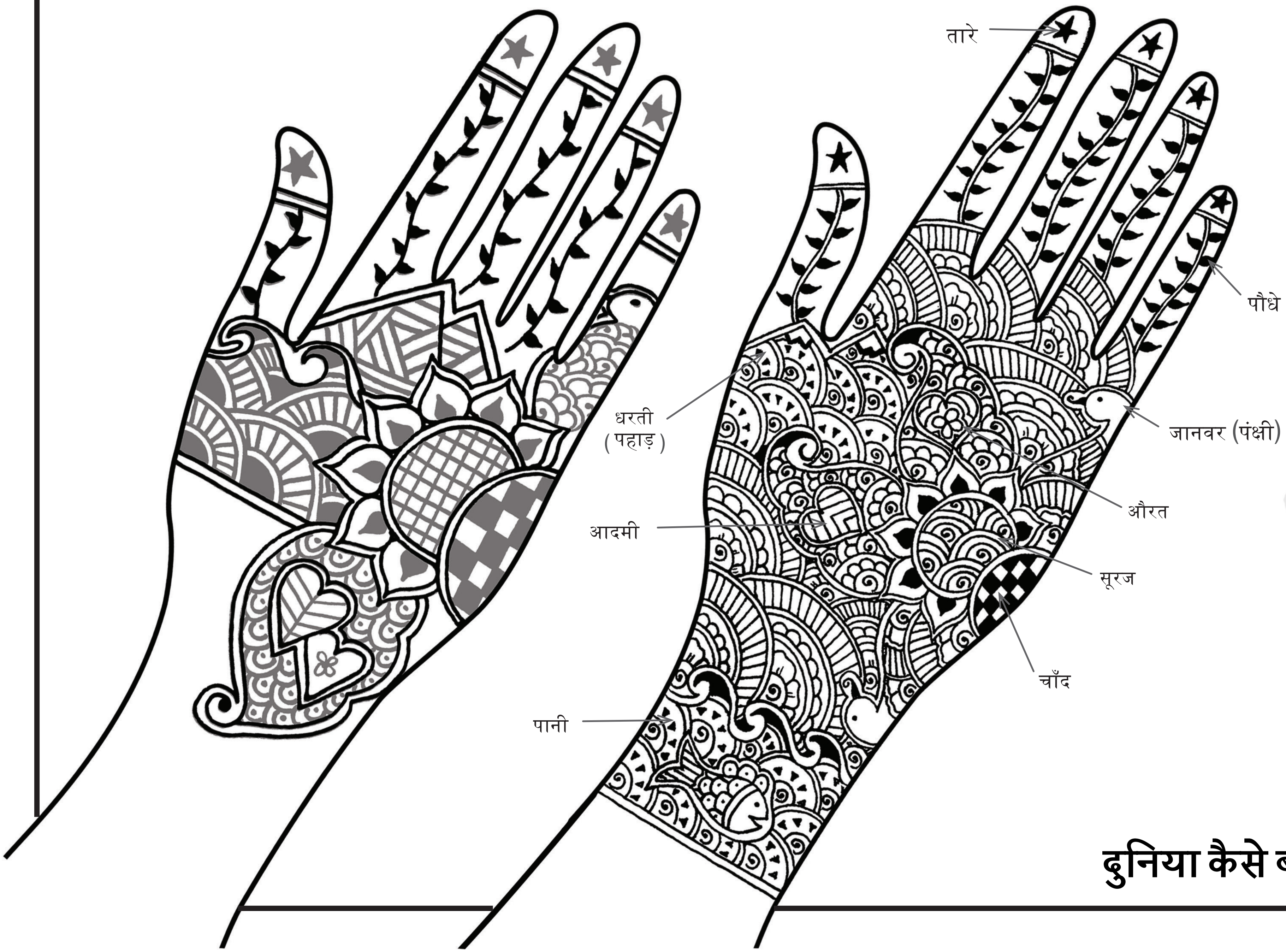

दुनिया कैसे बनी

कहानी
२

इन्सान द्वारा परमेश्वर के हुक्म को तोड़ना

परमेश्वर ने जितने जानवर बनाए उनमें से साँप सबसे चालाक था। एक दिन शैतान साँप के बीच में घुसकर हव्वा के पास आया और उस से पूछने लगा, “क्या सच में परमेश्वर ने तुम को सब पेड़ों के फल खाने से मना किया है?”

हव्वा ने कहा “नहीं सब पेड़ों के फल खाने से मना नहीं किया सिर्फ एक पेड़ का फल खाने से मना किया है जो भले और बुरे की समझ देने वाला पेड़ है। क्योंकि अगर हम उस पेड़ का फल खाएँगे तो हम मर जाएँगे।”

साँप ने कहा “नहीं तुम नहीं मरोगे, अगर तुम वह फल खाओगे तो परमेश्वर के जैसे बन जाओगे।” तब हव्वा ने वह फल देखा जो देखने में अच्छा था और हव्वा ने उस फल को खाया और अपने पति को भी खिलाया। फल खाते ही उन्हें यह महसूस हुआ कि उन्होंने कपड़े नहीं पहने हैं। तब उन्हें बहुत शर्म आई और उन्होंने अपने आप को पत्तों से ढक लिया।

जब शाम को परमेश्वर ने आदम को अवाज़ दी “आदम, आदम ” तब आदम और हव्वा छुप गए। परमेश्वर ने उन से कहा “तुम कहाँ हो ?” आदम ने कहा “हम डर गए थे क्योंकि हमने कपड़े नहीं पहने हैं।” परमेश्वर ने उन से पूछा “तुम्हें किसने बताया कि तुमने कपड़े नहीं पहने हैं ? क्या तुमने वह फल खाया जो मैंने तूम्हें खाने से मना किया था ?” तब आदम ने कहा कि “इस औरत ने मुझे खिलाया।” फिर परमेश्वर ने हव्वा से पूछा, “ये तुमने क्या किया ?” हव्वा ने उत्तर दिया “साँप ने मेरे साथ चालाकी की और उसने मुझे यह फल खिलाया।

फिर परमेश्वर ने उन को सज़ा दी। परमेश्वर ने हव्वा को यह सज़ा दी कि “जब तू बच्चा पैदा करेगी तो तूझे बहुत दर्द होगा।” परमेश्वर ने साँप को यह सज़ा दी कि “तू पूरी ज़िन्दगी मिट्टी चाटेगा और पेट के बल चलेगा।” फिर उसने आदम को कहा “जब तक तू पसीना नहीं बहाएगा तब तक रोटी नहीं खा सकेगा। तेरी ज़िन्दगी बड़ी दु:ख और मुश्किल से कटेगी। परमेश्वर की आज्ञा न मानने की वजह से उनका रिश्ता परमेश्वर से टूट गया। परमेश्वर ने उन्हें उस बाग में से निकाल दिया।

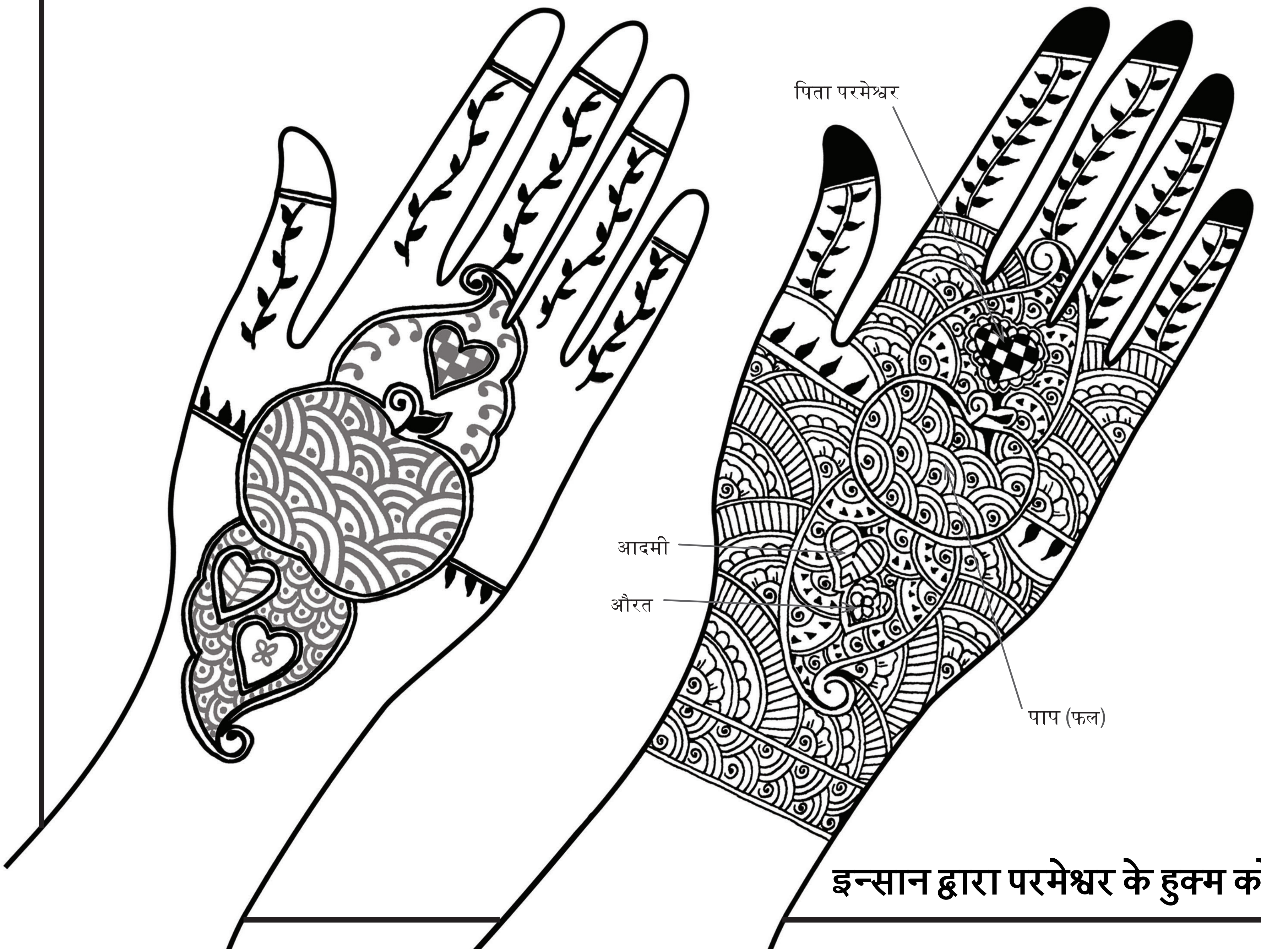

इन्सान द्वारा परमेश्वर के हुक्म को तोड़ना

कहानी
3

नूह का जहाज़

आदम और हव्वा के बच्चे हुए और उनके बच्चों के बच्चे हुए और सारी धरती लोगों से भर गई। वे सब लोग भी आदम और हव्वा की तरह परमेश्वर की बात नहीं मानते थे। और न ही शान्ति से रहते थे। वे लोग परमेश्वर से बहुत दूर हो गए थे। परमेश्वर ने देखा कि सारी धरती पाप से भर चुकी है और दुनिया भर के लोगों के ख़्याल गन्दे हो चुके हैं। इसलिए परमेश्वर बहुत ही उदास हुए कि उन्होने उन लोगों को बनाया। फिर परमेश्वर ने यह ईरादा किया कि मैं इस पूरी दुनिया को पानी से ख़त्म कर दुँगा। लेकिन दुनिया में एक आदमी था जिसका नाम नूह था। उसका परमेश्वर के साथ बहुत अच्छा रिश्ता था। और परमेश्वर भी उस से बहुत खुश थे।

परमेश्वर ने नूह को बोला कि “मैं पूरी दुनिया को पानी से ख़त्म कर दूँगा। इसलिए तू एक पानी का जहाज़ बना ताकि तेरा परिवार आने वाली बरबादी से बच सके।” नूह ने परमेश्वर की बात मानी और एक जहाज़ बनाया। जब पूरा जहाज़ बन गया तो परमेश्वर ने नूह से कहा कि अपनी पत्नी और पूरे परिवार को जहाज़ के अंदर ले जा। और हर किस्म के जानवर और पंक्षियों का जोड़ा भी अपने साथ ले जाना। नूह ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे बताया था। इसके बाद धरती पर चालीस दिन और चालीस रात तक बारिश होती रही। जितने भी इन्सान और जानवर जो धरती पर थे सब मर गए। सिर्फ नूह का परिवार और जो जहाज़ में थे वे ही बचे। जब बारिश बन्द हो गई तब पानी धीरे-धीरे कम होने लगा। फिर नूह ने एक कबूतर को जहाज़ से बाहर भेजा ताकि पता चल सके कि धरती से पानी सूख गया है या नहीं। जब वह कबूतर वापस आया तो उसकी चोंच में पेड़ की एक डाली थी। जिससे नूह को पता चला कि धरती पर पानी सूख गया है।

फिर नूह अपने परिवार के साथ जहाज़ से बाहर आया और उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया। परमेश्वर नूह से बहुत खुश हुए। परमेश्वर ने वायदा किया कि मैं दूबारा इस दुनिया को पानी से ख़त्म नहीं करूँगा। इस वायदे की निशानी परमेश्वर ने आसमान में इंद्र-धनुष बनाकर दी। फिर परमेश्वर ने नूह को आशीष दी कि वे दुनिया को भर दे।

कहानी
3

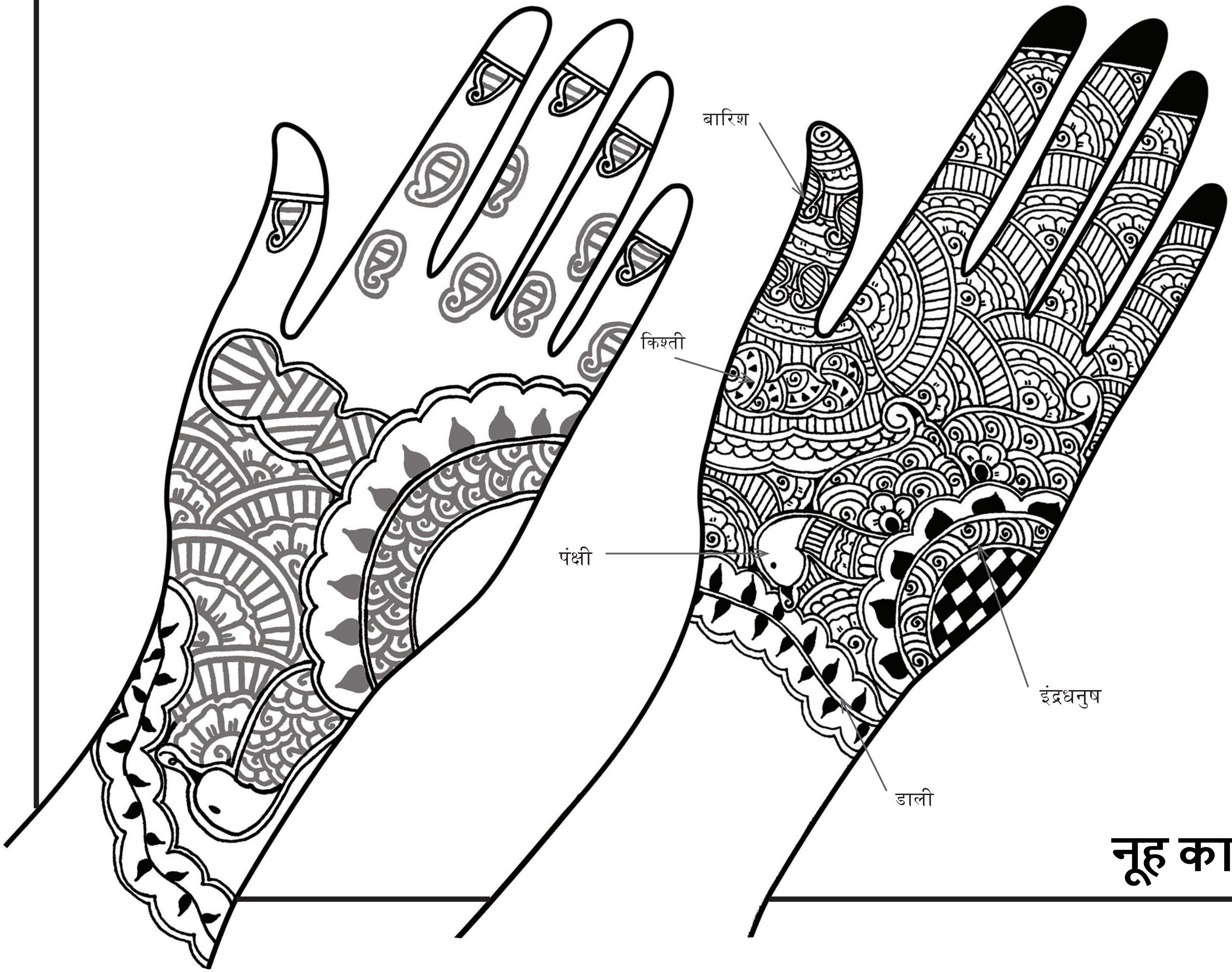

नूह का जहाज़

कहानी 4

परमेश्वर का इब्राहीम के साथ वायदा

नूह के बच्चों के बच्चे हुए और सारी धरती लोगों से भर गई। पर वे लोग भी परमेश्वर की बात नहीं मानते थे। और परमेश्वर से दूर की रहे थे। पर परमेश्वर उन से एक अच्छा रिश्ता बनाना चाहता थे। इसलिए परमेश्वर ने एक आदमी को चुना जिसका नाम इब्राहीम था। परमेश्वर ने इब्राहीम की सन्तान के द्वारा पूरी दुनिया को आशीष देने का इरादा किया।

परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा "तू अपने घर और लोगों को छोड़कर उस देश में चले जाना जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तेरा नाम महान करूँगा। मैं तेरी सन्तान को एक बड़ी जाति बनाऊँगा। और इस जाति से मैं दुनिया की सभी जातियों को आशीष दूँगा।" तब इब्राहीम ने परमेश्वर की बात मानी और अपना घर छोड़कर चला गया। परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ वायदा किया कि "मैं यह देश तेरी सन्तान को दे दूँगा।"

इब्राहीम बहुत बूढ़ा हो चुका था। पर उसका कोई बच्चा नहीं था। फिर इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा कि "तेरी आशीषों का मुझे क्या फ़ायदा क्योंकि मेरे पास कोई बच्चा नहीं है।" परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि "आसमान के तारों को देखो, क्या तुम इन्हें गिन सकते हो ? मैं तेरी सन्तान को इन तारों की तरह बढ़ाऊँगा।"

क्योंकि इब्राहीम और उसकी पत्नी बूढ़े हो चूके थे इसलिए बच्चा पैदा करना उन के लिए बहुत मुश्किल बात थी। मगर इब्राहीम परमेश्वर पर विश्वास करता था। इसलिए परमेश्वर का रिश्ता इब्राहीम के साथ बहुत अच्छा था।

और परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ किया हुआ वायदा पूरा किया और जब इब्राहीम १०० साल का था तब उसके घर एक बेटा पैदा हुआ। इस तरह परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ किया हुआ वायदा पूरा किया।

कहानी
4

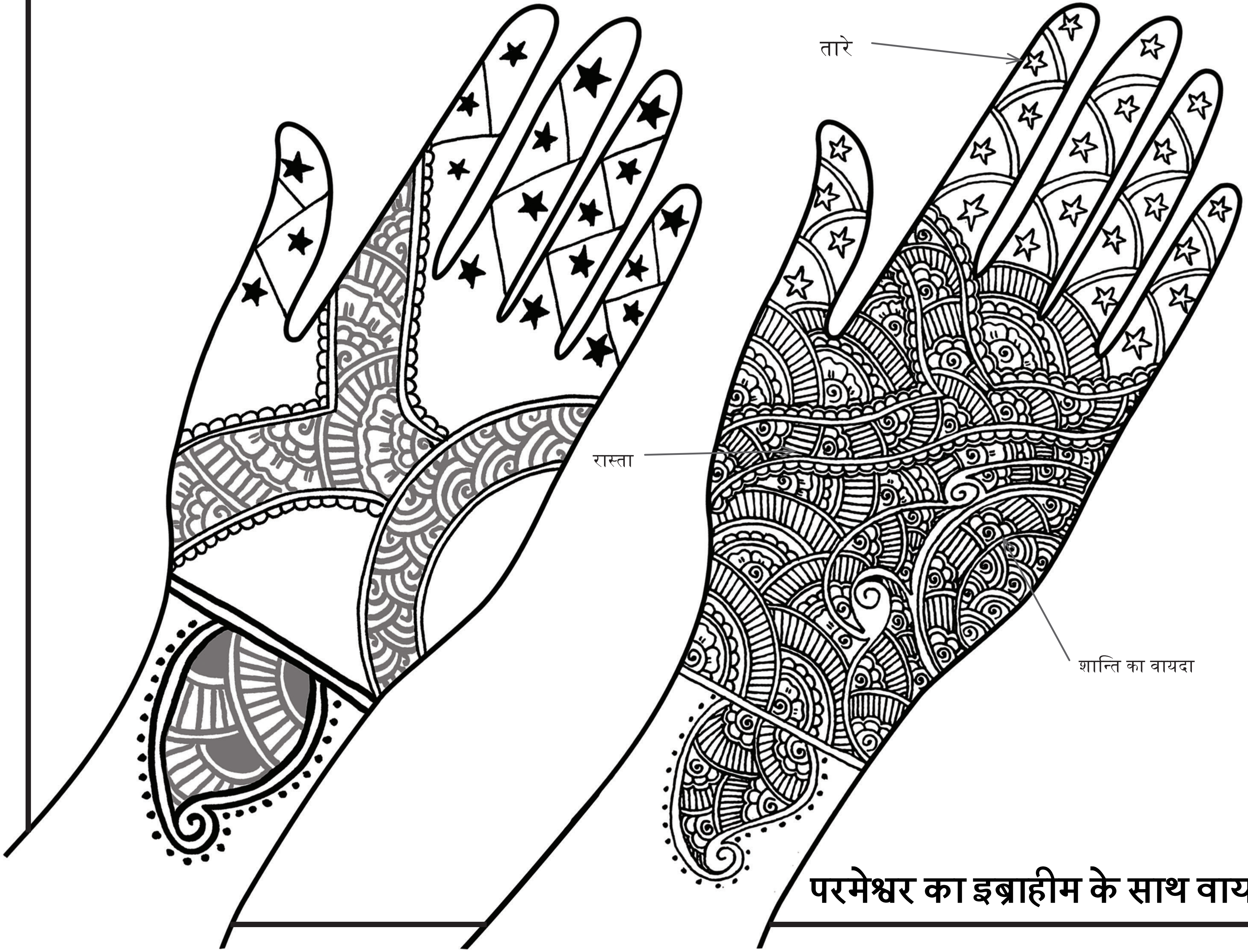

परमेश्वर का इब्राहीम के साथ वायदा करना

कहानी
5

युसफ का सपना

इब्राहीम के बच्चे हुए और उनके बच्चों के बच्चे हुए और वे वायदा की हुई ज़मीन पर रहने लगे। उन में से एक का नाम युसफ था। यह कहानी युसफ की है। युसफ का पिता युसफ को अपने ग्यारह बेटों में सबसे ज्यादा प्यार करता था। एक दिन युसफ के पिता ने युसफ को एक बहुत ही ख़ास और सुन्दर कोट तोहफ़े के रूप में दिया। पर युसफ के भाई युसफ से बहुत नफरत करते थे क्योंकि उनका पिता युसफ को सब से ज़्यादा प्यार करता था। एक दिन युसफ ने एक सपना देखा। युसफ ने उस सपने के बारे में अपने परिवार को बताया। उसने बाताया कि सपने में सूरज, चाँद और ग्यारह तारे युसफ के सामने झुकते हैं। फिर उसके पिता ने डाँट कर कहा "यह कैसा सपना है जो तुने देखा है ? क्या सच मुच मैं, तेरी माँ और तेरे भाई तेरे सामने झुकेंगे ?" यह बात सुनकर उसके भाई युसफ से और नफरत करने लगे।

थोड़ी देर बाद युसफ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिए चले गए। तब युसफ के पिता ने युसफ से कहा कि "जा तेरे भाई जो भेड़-बकरियों को चराने के लिए गए हुए हैं, उनको देख कर आ, और आकर मुझे बता कि वे कैसे हैं।" जब युसफ के भाइयों ने देखा कि युसफ आ रहा है उन्होंने कहा कि "देखो वह सपना देखना वाला आ रहा है। आओ हम युसफ को एक गहरे कुएँ में फेंक देते हैं ताकि वह मर जाए।" जब युसफ इनके पास आया तब उसके भाइयों ने उसे उठाकर कुएँ में फेंक दिया। उन्होंने उसका सुन्दर कोट उतार दिया जो युसफ के पिता ने युसफ को तोहफ़े में दिया था।

इस के बाद जब युसफ के सारे भाई खाना खाने के लिए बैठे, भाइयों ने देखा कि वहाँ कुछ व्यापारी आ रहे हैं। तो उन्होंने सोचा कि क्यों न हम युसफ को व्यापारियों के हाथों में बेच दें। उन्होंने युसफ को बेच दिया। फिर युसफ के भाईयों ने एक बकरी को मारा और युसफ के कोट को उस ख़ून में डुबाया। वे घर गए और युसफ के कोट को उसके पिता को दिखाया। वे बोले कि "यह कोट हमें रास्ते में मिला है। देख कर पहचान ले क्या यह कोट तेरे बेटे युसफ का ही है या नहीं ?" उस कोट को देख कर उसका पिता रोने लगा और बोला "यह मेरे बेटे युसफ का कोट ही है। उसे किसी जंगली जानवर ने खा लिया।" उस के बाद उसने अपने कपड़े फाड़े और बहुत दिनों तक युसफ के लिए रोता रहा। इसी दौरान उन व्यापारियों ने युसफ को एक दूसरे देश में एक वज़ीर को बेच दिया। उस देश का नाम मिस्र था।

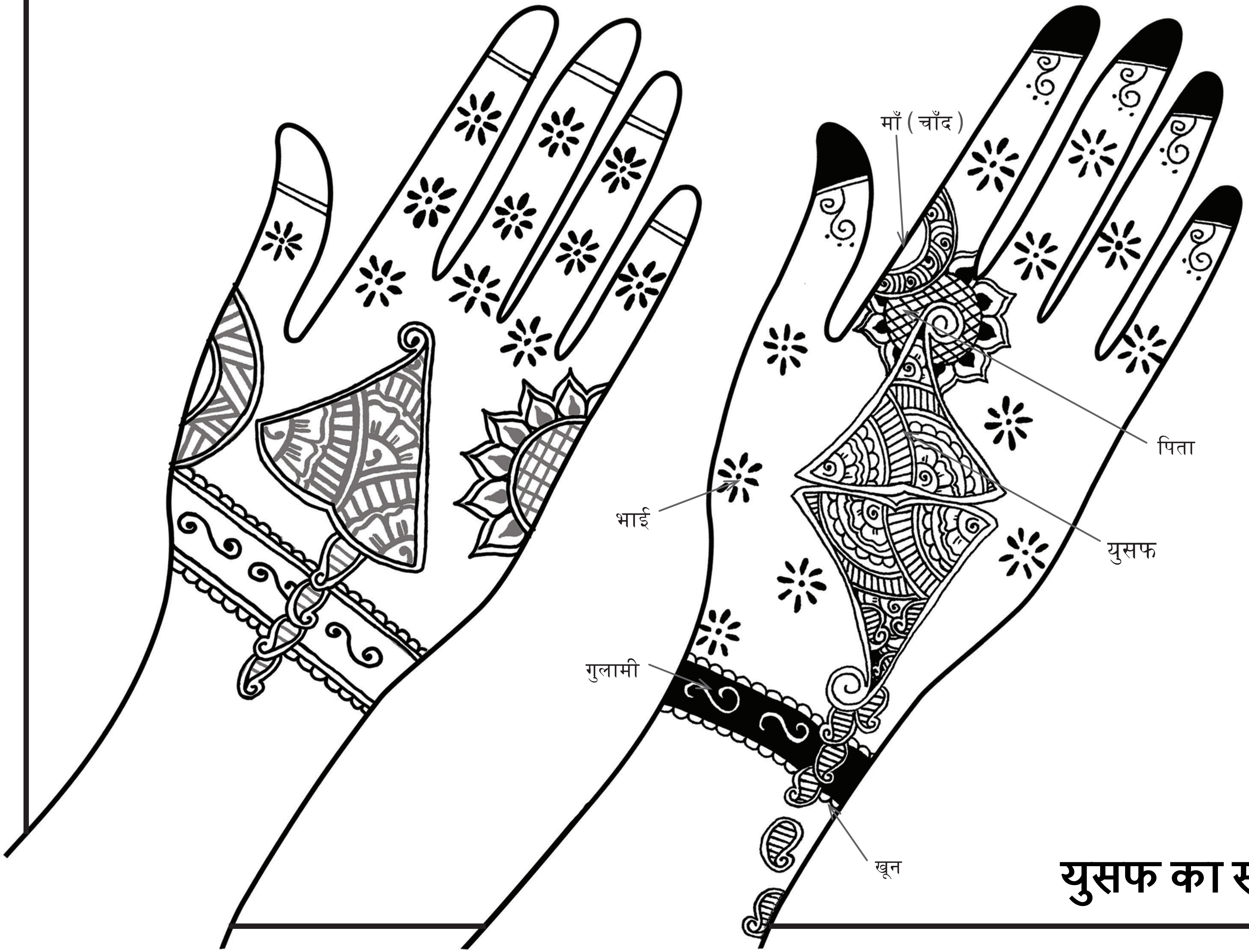

युसफ का सपना

कहानी
6

युसफ का मिस्र में अधिकारी बनना

जब युसफ उन व्यापरियों के साथ मिस्र में पहुँचा उन व्यापारियों ने उस को एक राजा के वज़ीर के आगे बेच दिया। लेकिन परमेश्वर युसफ के साथ था। परमेश्वर ने युसफ को आशीषित किया हुआ था। यह देखकर उस वज़ीर ने युसफ को अपने घर का सारा अधिकार दे दिया। युसफ बहुत ही खुबसूरत जवान था। इसलिए उस वज़ीर की पत्नी ने युसफ को उसके साथ सोने के लिए बुलाया। तब युसफ ने उसको यह कह कर मना कर दिया कि वह परमेश्वर के विरोध गुनाह नहीं कर सकता। इस बात से नाराज़ हो कर उस वज़ीर की पत्नी ने युसफ के ऊपर झूठा इल्ज़ाम लगाया कि युसफ ने उसके साथ सोने की कोशिश की। यह सुनकर उस राजा के वज़ीर को बहुत गुस्सा आया। उसने युसफ को जेल में डाल दिया। पर परमेश्वर फिर भी युसफ के साथ थे। कुछ समय के बाद मिस्र का राजा भी अपने दो नौकरों को जेल में डाल देता हैं क्योंकि उन्होंने राजा के विरोध में कोई गुनाह किया था। एक रात उन दोनों नौकरों ने सपना देखा जिस से वे दोनों बहुत परेशान हो गए। तब परमेश्वर ने युसफ को बताया कि उन सपनों का क्या मतलब है। जो कुछ युसफ ने उन को बताया सब कुछ वैसे ही हुआ। उन में से एक नौकर दुबारा से राजा के साथ काम करने लगा।

दो साल के बाद मिस्र के राजा ने एक सपना देखा। उस सपने में उसने सात मोटी गायों को एक नदी से बाहर आते हुए देखा। उसके बाद राजा ने सात कमज़ोर गायों को नदी से बाहर आते हुऐ देखा। तब उन सात कमज़ोर गायों ने सात मोटी गायों को खा लिया। राजा को इस सपने का मतलब कोई नहीं बता पाया। तब राजा के नौकर को याद आया कि कैसे जेल में युसफ ने उसके सपने का मतलब बताया था और वह सब कुछ सच निकला था। तभी नौकर ने जा कर राजा को युसफ के बारे में बताया। यह सुन कर राजा ने जेल से युसफ को बुलाया। युसफ ने राजा को बोला कि “राजा मेरे पास कोई ताक़त नहीं है कि मैं आपके सपने का मतलब बता सकूँ। परन्तु परमेश्वर आपको उसका मतलब बताएंगे।” राजा ने युसफ को अपना सपना बताया। सपने को सुनकर युसफ राजा से बोला कि “परमेश्वर आपको आने वाले समय के बारे में बता रहे है। वे सात मोटी गायें आने वाले सात सालों को दर्शाती हैं कि आने वाले सात साल हमारी उन्नति के साल होंगे। और कमज़ोर सात गायें उसके बाद के सात सालों को दर्शाती हैं। जिन सालों में धरती पर अकाल पड़ेगा।” तब युसफ ने राजा को बताया कि “आप को एक ऐैसे आदमी को चुनना चाहिए जो उन्नति के सालों में खाने को सँभाल कर रख सके। ताकि अकाल के समय में लोग भुखे न मरें।” तब राजा ने देखा कि परमेश्वर की आत्मा युसफ के साथ है। उसने युसफ को इस काम के लिए चुन लिया और साथ ही उसको पूरे देश का अधिकारी ठहरा दिया।

कहानी
6

युसफ का मिस्र में अधिकारी बनना

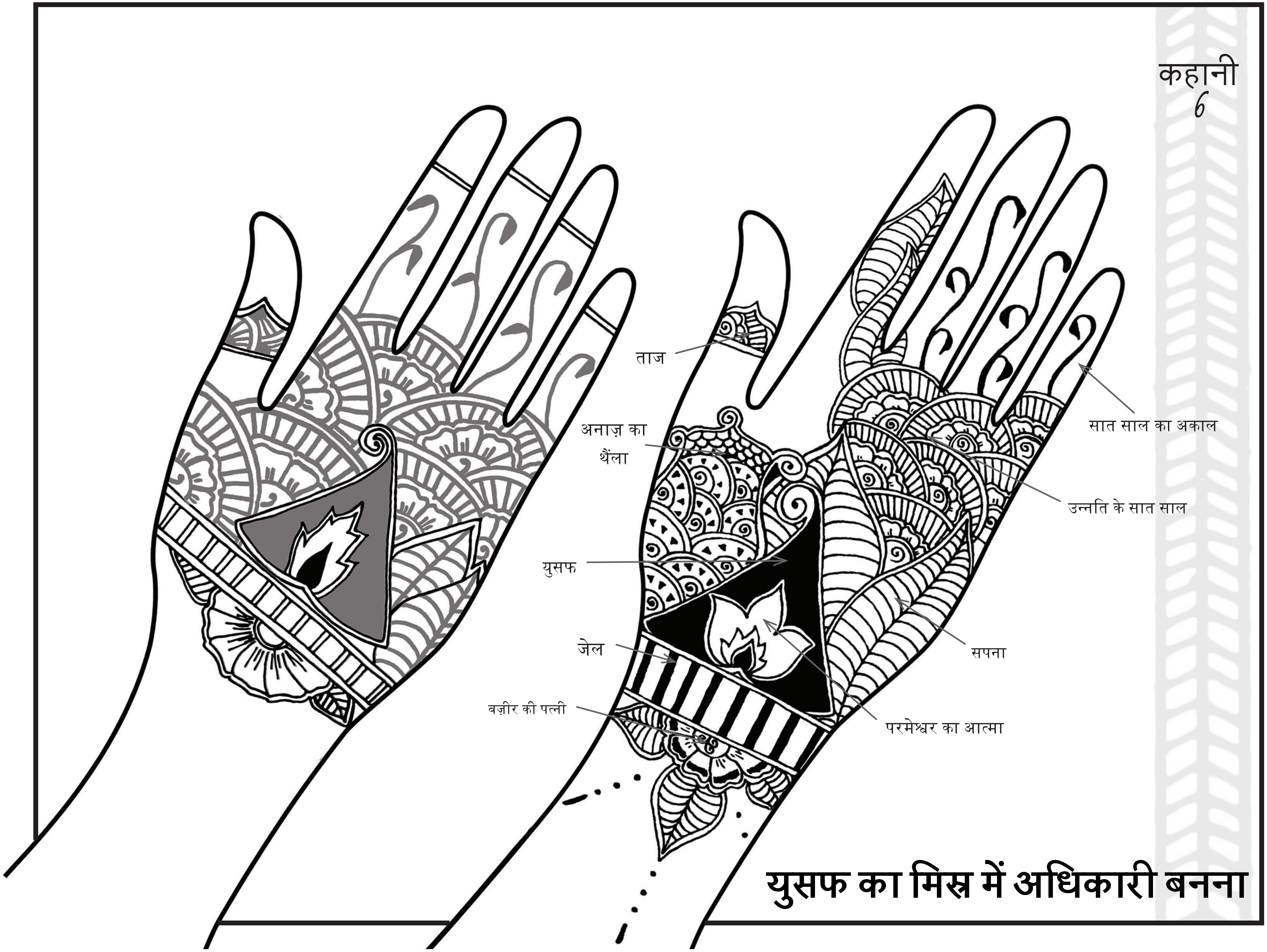

कहानी
7

युसफ का अपने भाईयों को माफ़ करना

युसफ का परिवार अकाल की वजह से भूखा मरने लगा। इसी दौरान युसफ के पिता ने सुना कि मिस्र में अनाज़ मिल रहा है। पर उसको यह बात पता नहीं थी कि उसी का बिछड़ा हुआ बेटा युसफ उन अनाज़ के गोदामों पर आधीकारी है। फिर उसने अपने दस बड़े बेटों को अनाज़ लेने के लिए भेजा। लेकिन युसफ के पिता ने अपने सब से छोटे बेटे को उनके साथ नहीं भेजा। क्योंकि वह उसको किसी किस्म का नुकसान नहीं होने देना चाहता था।

जब युसफ के भाई मिस्र पहुँचे तो उन्होंने युसफ को झुक कर प्रणाम किया। उन्होंने अपने भाई युसफ को नहीं पहचाना। लेकिन युसफ ने उन को पहचान लिया। युसफ को बहुत सालों पहले देखा हुआ सपना याद आया जिसमें उसके भाई उसके सामने झुकते हैं। वह सपना पूरा हुआ। तब उसने उन से कहा "तुम लोग जासूस हो।" उन्होंने कहा "हम जासूस नहीं हैं। हम ईमानदार लोग हैं। हम बारह भाई थे जिसमें से एक भाई मर गया। और सब से छोटा भाई हमारे पिता के पास घर में है। हम दस भाई अनाज़ लेने आये हैं।"
तब युसफ ने उन से कहा "यह साबित करो कि तुम सच बोल रहे हो। तुम सब भाईयों में से एक भाई को जेल में रहना पड़ेगा। बाकी भाई अनाज़ लेकर वापिस घर जा सकते हैं। लेकिन तुम्हें घर जाकर अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास लाना पड़ेगा। उस को देखकर मैं तुम लोगों पर यकीन कर सकूँगा के तुम लोग झूठ नहीं बोल रहे हो।" वे युसफ के साथ सहमत हो गए और उन्होने अपने भाईयों में से एक भाई को युसफ के पास जेल में छोड़ दिया। युसफ के भाईयों ने घर वापिस आ कर अपने पिता को सारी बात बताई। जब उनके पिता ने सारी बात सुनी तो वह डर गया। इसी कारण वह अपने सबसे छोटे बेटे को उनके साथ मिस्र में नहीं भेजना चाहता था।

लेकिन जब सारा अनाज़ ख़त्म हो गया तो उनके पिता ने कहा कि "तुम सबसे छोटे भाई को अपने साथ ले जा सकते हो। ताकि तुम फिर से अनाज़ ला सको।" वह युसफ के पास फिर से गए और युसफ को झुककर प्रणाम किया। फिर युसफ ने सब भाईयों का हाल पूछा और कहा कि "तूम्हारा बूढ़ा पिता कैसा है ? क्या वह ज़िन्दा है ?" उन्होंने कहा कि "हां-हां हमारा पिता अभी तक ज़िन्दा है।" फिर युसफ ने उन से पूछा कि "क्या यही आपका छोटा भाई है जिसके बारे में आपने मुझे बताया था ?" तब युसफ अपने कमरे में गया और रोने लगा। फिर युसफ ने अपना मुँह धोया और सब भाईयों के साथ मिल कर खाना खाया। अखारि में युसफ उनके सामने अपने आप को ज़्यादा समय तक रोक न सका। वह चिल्लाकर रोने लगा और बोला "मैं ही युसफ हूँ तुम्हारा भाई जिसको तुम ने व्यपारियों के हाथों में भेज दिया था।" उसके भाई डर गए और चुप चाप खड़े रहे। फिर युसफ ने कहा "तुम अपने आप पर गुस्सा न करो कि तुम लोगों ने मेरे साथ क्या किया। क्योंकि यह सब कुछ परमेश्वर की योजना थी। उसने मुझे आधिकारी बनाया कि मैं तुम्हे बचा सकूँ। परमेश्वर ने मुझे यहाँ भेजा ताकि तुम एक बड़ी जाति बन सको। क्योंकि परमेश्वर ने यही वायदा किया था। अब तुम लोग जल्दी मेरे पिता के पास घर वापिस जाओ और उसको बताओ कि युसफ ज़िन्दा है।" फिर युसफ का पिता और भाई वापस आये और वहीं रहने लगे जहाँ युसफ रहता था।

कहानी 7

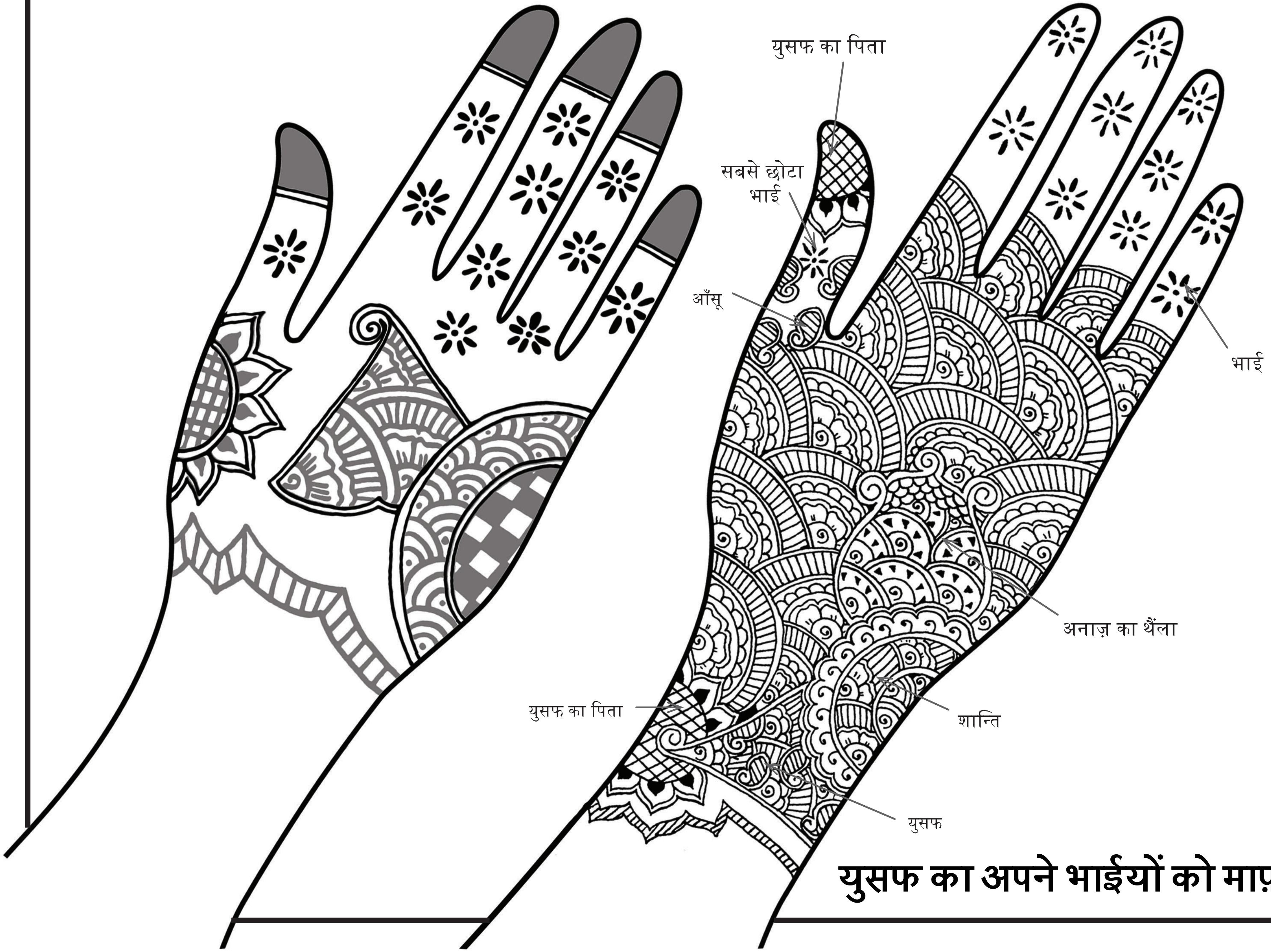

युसफ का अपने भाईयों को माफ़ करना

कहानी
४

परमेश्वर का एलिय्याह को भेजना

युसफ का परिवार मिस्र में रहने लगा। लेकिन परमेश्वर के पास उन के लिए एक योजना थी कि उन्होंने उस देश में रहना था जिस देश का परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ वायदा किया था। बहुत सालों के बाद परमेश्वर उन्हें वायदा किए हुए देश में ले गया और वे एक बड़ी जाति बन गई। पर इब्राहीम की सन्तान के लोग पहले की तरह परमेश्वर की बात नहीं मानते थे। उन के राजा ने भी बाल देवता की पूजा करनी शुरू कर दी। तब परमेश्वर ने उन के पास एक पैगंबर को भेजा जिस का नाम एलिय्याह था।

एक दिन एलिय्याह ने राजा से कहा कि “अपने सब लोगों को एक पहाड़ पर इकट्ठा करो।” जब सब लोग पहाड़ पर आ गए तो एलिय्याह ने उन सब लोगों को पूछा कि “तुम क्यों दो भगवानों को मानते हो ? यदि परमेश्वर सच्चा है तो उसकी पूजा करो। अगर बाल देवता सच्चा है तो उसके पीछे चलो।” पर कोई भी उस को उतर न दे सका। एलिय्याह ने दो जानवर मँगवाए। उसने बाल देवता के पुजारियों से कहा कि “एक जानवर को बलिदान के लिए तैयार करो। पर उस में आग मत जलाना। और मैं दूसरा जानवर बलिदान के लिए तैयार करूँगा। हम अपने भगवानों को पुकारेंगे। जो भगवान अपना जवाब आग के साथ देगा वह ही सच्चा भगवान होगा।”

सब लोग तैयार हो गए। बाल देवता के पुजारियों ने पहले अपने भगवान को पुकारा। उन्होंने सुबह से ले कर दोपहर तक पुकारा पर कोई जवाब न आया। तब एलिय्याह ने उन से कहा “ज़ोर से पुकारो। क्या पता वह सो रहा हो या फिर यात्रा पर गया हो या शायद किसी काम में लगा हो।” उन्होंने और ज़ोर से पुकारा और वे अपने शरीर को चाकू के साथ काटने लगे और खुन बहाने लगे। वे सुबह से ले कर शाम तक पुकारते रहे पर उनके देवता ने कोई जवाब न दिया। फिर एलिय्याह ने उन से कहा कि “मुझे देखो।” एलिय्याह ने पत्थरों की एक वेदी बनाई इस वेदी के चारों तरफ एक खाई बनाई। खाई बनाने के बाद उसने वेदी के ऊपर लकड़ियाँ रखी। तब एलिय्याह ने बलिदान किए जाने वाले जानवर को वेदी पर रखा और उसके ऊपर पानी डालना शुरू किया। वह तब तक पानी डालता रहा जब तक खाई पानी से भर गई। जब वह खाई पानी से भर गई तब एलिय्याह ने परमेश्वर से प्रार्थना की। “हे महान सर्व शक्तिमान परमेश्वर मुझे उत्तर दे और इन लोगों को देखा कि तू ही महान परमेश्वर है। ताकि यह सब लोग तेरी ओर वापस आ जाएँ।”

तब एक आग आसमान से उतरी और उसने उस जानवर को भस्म कर दिया और यहाँ तक कि उस आग ने लकड़ियाँ, पत्थर, आस पास की मिट्टी और पानी तक को भस्म कर दिया। यह सब कुछ देख कर वहाँ पर खड़े लोग कहने लगे की परमेश्वर ही ऊँचा और सच्चा परमेश्वर है।

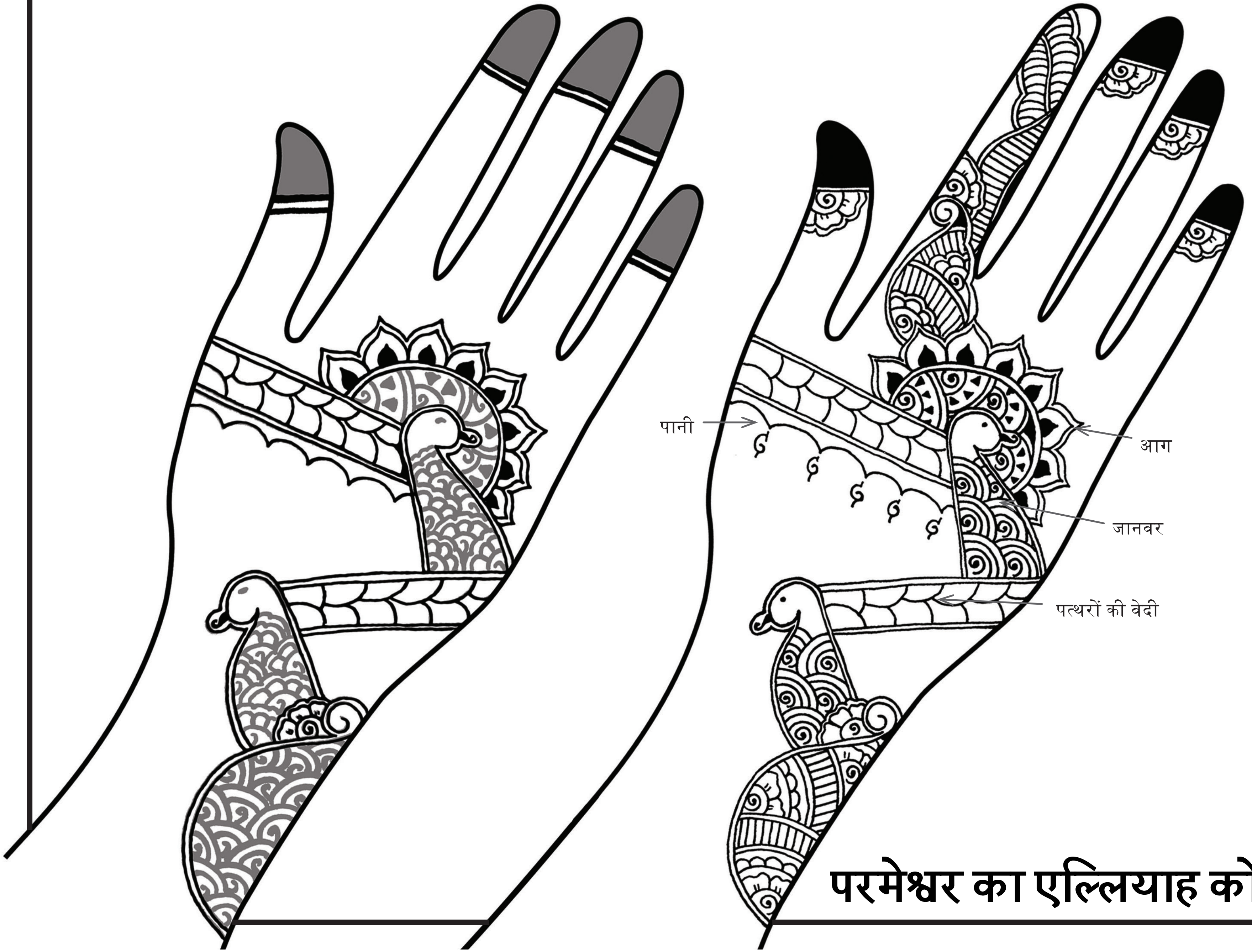

परमेश्वर का एल्लियाह को भेजना

कहानी
9

एलिय्याह को परमेश्वर द्वारा शान्ति

जो कुछ भी एलिय्याह ने किया उस बात की वजह से राजा की पत्नी एलिय्याह को जान से मारना चाहती थी। एलिय्याह इस बात से डर गया और अपनी ज़िन्दगी से परेशान हो गया। वह जंगल में भाग गया और एक पेड़ के नीचे बैठकर परमेश्वर से अपने मरने के लिए प्रार्थना करने लगा। उसने कहा “मैं अब इससे ज़्यादा सहन नहीं कर सकता।” फिर वह पेड़ के नीचे लेटकर सो गया। जब वह सो रहा था, एक फ़रिश्ते ने उसको छूकर कहा, “उठो और खाना खाओ।” एलिय्याह उठा और उसने अपने पास कुछ खाना और पानी देखा। वह खा पी कर फिर से सो गया।

आख़िर में जब वह जागा तब बहुत दिनों तक उसने जंगल की यात्रा की और एक गुफा में रूका। परमेश्वर ने उससे कहा, “एलिय्याह तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?” उसने जवाब दिया, “मैंने आपकी हर आज्ञा को मानता है, लेकिन इब्राहीम की सन्तान ने आपकी आज्ञा न मानकर आपके साथ रिश्ता तोड़ दिया है। उन्होंने आपके सब सेवकों को मार डाला, अब सिर्फ मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मारना चहाते हैं।”

परमेश्वर ने उससे कहा, “पहाड़ पर जाकर मेरे सामने खड़े हो जाओ।” जब एलिय्याह वहाँ खड़ा हुआ परमेश्वर उसके सामने से गुज़रा और एक ताक़तवर तूफ़ान ने पहाड़ को टक्कर मारी। यह एक ऐसा ख़तरनाक धमाका था कि चटटानें टूट गईं, लेकिन महान परमेश्वर उस तूफ़ान में नहीं था। तूफ़ान के बाद वहाँ भूचाल आया लेकिन महान परमेश्वर उस भूचाल में भी नहीं था। भूचाल के बाद वहाँ आग लगी लेकिन महान परमेश्वर आग में भी नहीं था। आग जलने के बाद वहाँ एक हल्की सी आवाज़ आई। जब एलिय्याह ने उस आवाज़ को सुना, वह कपड़ों से अपने मुँह को ढक कर गुफा के दरवाज़े के सामने जाकर खड़ा हो गया। तब परमेश्वर की आवाज़ ने फिर एलिय्याह से पूछा, “एलिय्याह तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?” उसने जवाब दिया, “मैंने आपकी हर आज्ञा को माना है, लेकिन इब्राहिम की सन्तान ने आपकी आज्ञा न मानकर आपके साथ रिश्ता तोड़ दिया। उन्होंने आपके सब सेवकों को मार डाला, अब सिर्फ मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मारना चाहते हैं।”

तब परमेश्वर ने एलिय्याह को वापस जाने के लिए कहा। परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा, “तुम अकेले नहीं हो, वहाँ सात हज़ार और भी लोग हैं जो दूसरे भगवानों के सामने नहीं झुकते।” फिर परमेश्वर ने एलिय्याह को और काम करने के लिए दिया और एक ख़ास मददगार को उसके साथ भेजा।

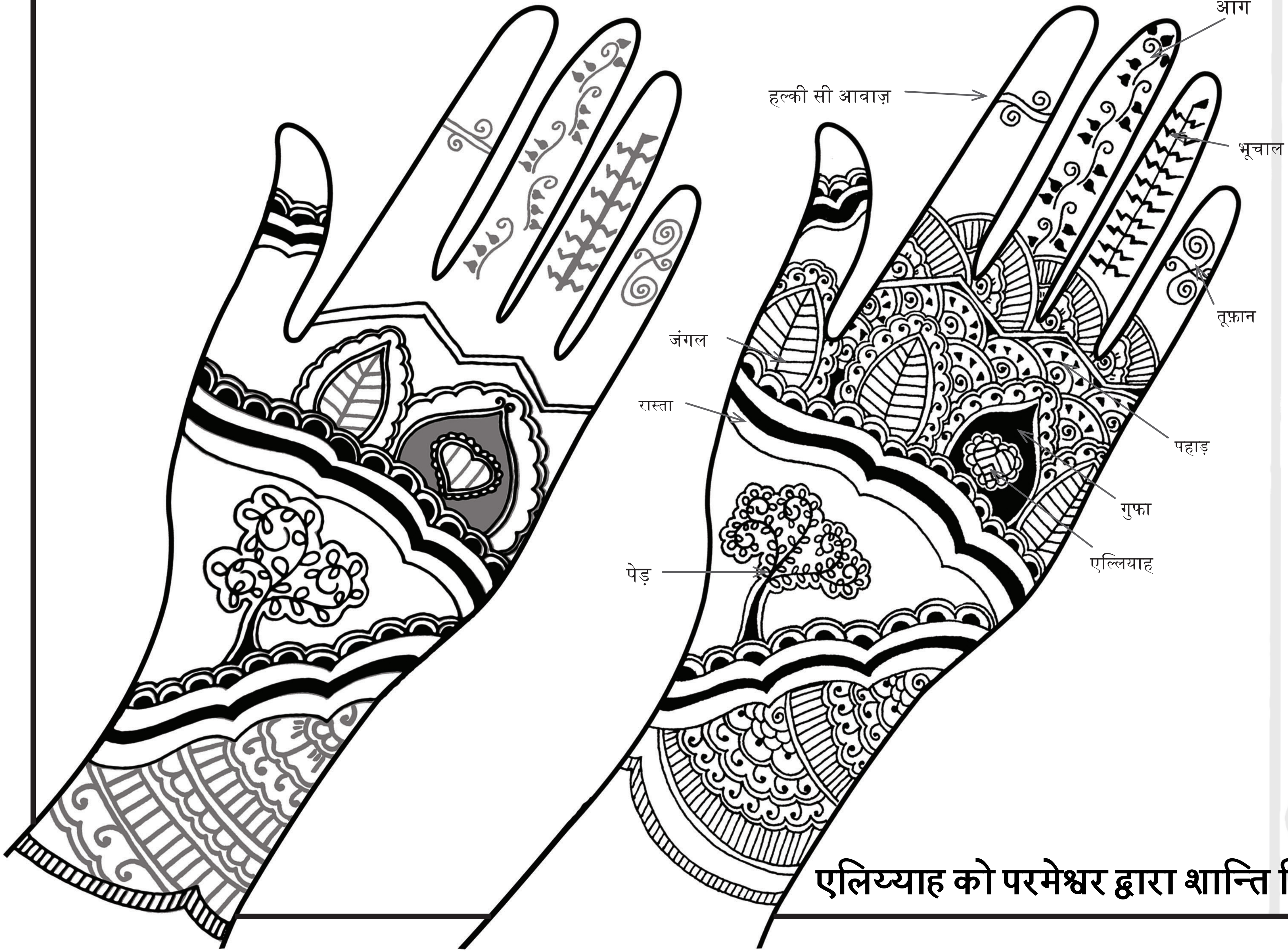

एलिय्याह को परमेश्वर द्वारा शान्ति मिलना

कहानी 10

आने वाले मुक्तिदाता के बारे में वायदा

परमेश्वर को मानने वाले कुछ लोग ही बचे थे, ज़्यादातर इब्राहीम की सन्तानों ने परमेश्वर को न मानना जारी रखा। वे परमेश्वर से अलग बने रहे। लेकिन परमेश्वर ने उनको बचाने के लिए एक ख़ास योजना बना रखी थी। उसकी योजना थी कि वह इब्राहीम की सन्तान में से पूरी दुनिया को बचाने वाला एक मुक्तिदाता पैदा करेगा। इस पूरी योजना की खबर सुनाने के लिए परमेश्वर ने बहुत सारे पैगंबरों को उन लोगों में भेजा। जिनमें से एक पैगंबर का नाम यशायाह था। यशायाह के पास लोगों के लिए आशा और शान्ति का एक ख़ास संदेश था।

उसने लोगों से कहा, "परमेश्वर एक मुक्तिदाता को भेजेगा और वह एक ऐसी औरत से पैदा होगा जो कुंवारी होगी। कुछ लोग उस मुक्तिदाता के साथ बहुत बुरा व्यवहार करेंगे। उसको कोड़े मारे जाएँगे, पीटा जाएगा और सलीब पर चढ़ा दिया जाएगा। और यह सब कुछ वह हमारी शान्ति के लिए सहेगा।

"हम सभी भेड़ों की तरह हैं, जैसे भेड़ें रास्ते से भटक जाती है वैसे हम सब भी परमेश्वर के रास्ते से भटक गए हैं। हम सब ने पाप किया। हमने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना लेकिन परमेश्वर हमारे सब पाप उस मुक्तिदाता के ऊपर डाल देगा। मुक्तिदाता एक मेमने की तरह होगा। जैसे मेमना कसाई से कत्ल किया जाता है वैसे ही हमारा मुक्तिदाता हमारे लिए मारा जाएगा। वह हमारे पापों के लिए मारा जाएगा लेकिन फिर वह मरे हुओं में से जी उठेगा। फिर वह एक शान्तिपूर्ण राज्य बनाएगा जो कभी भी ख़त्म नहीं होगा। वह शान्ति का राजकुमार कहलाएगा। जो कुछ भी वह करेगा उससे बहुत सारे लोग परमेश्वर के साथ दुबारा से रिश्ता बना पाएँगे।

यह आशा और शान्ति का वह संदेश है जो यशायाह ने लोगों को दिया। और उस समय से लोग वायदा किए हुए मुक्तिदाता का इन्तज़ार करने लगे।

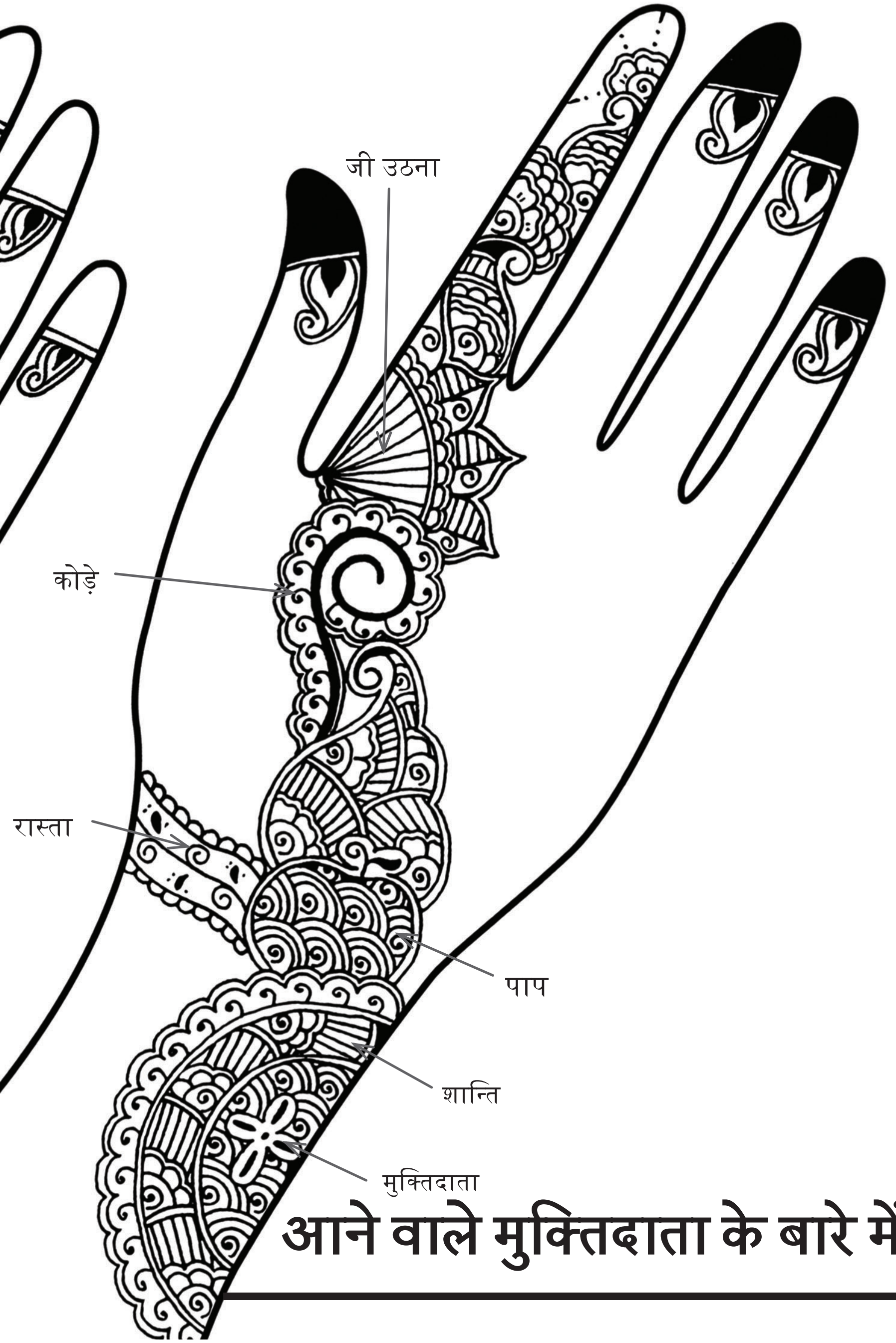

आने वाले मुक्तिदाता के बारे में वायदा

कहानी
11

प्रभु यीशु का जन्म

इब्राहीम की सन्तान ने कई सालों तक आने वाले मुक्तिदाता का इन्तज़ार किया। जैसा कि परमेश्वर ने वायदा किया था, उसने मुक्तिदाता को भेजा।

परमेश्वर ने एक फ़रिशते को एक गाँव में भेजा, जहाँ मरियम नाम की एक कुँवारी रहती थी। शादी के लिए उसकी मंगनी हो चुकी थी। फ़रिशते ने उससे कहा, “डरो मत परमेश्वर तुम्हारे साथ है। तुझ पर परमेश्वर की कृपा हुई है। परमेश्वर तुझसे खुश है। सुन तू गर्भवती होगी और तेरे घर एक बेटा पैदा होगा, और तू उस का नाम यीशु रखना। वह बहुत महान होगा और वह परमेश्वर का बेटा कहलाएगा।” मरियम ने फ़रिशते से पूछा, “यह कैसे हो सकता है ? मैं तो कुँवारी हूँ।” फ़रिशते ने जवाब दिया, यह किसी आदमी से नहीं बल्कि परमेश्वर की आत्मा के द्वारा होगा।

मरियम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और उसे इस काम के लायक़ समझने के लिए परमेश्वर की महीमा की।

जब मरियम के मंगेतर को पता चला कि मरियम गर्भवती है, तो वह उसको तलाक देने की सोचने लगा। लेकिन परमेश्वर के एक फ़रिशते ने उसको दर्शन देकर बताया कि जो बच्चा मरियम के पेट में है, वह परमेश्वर की ओर से है। तब उसने मरियम को अपनी पत्नी बनाया। लेकिन उसका मरियम के साथ किसी भी तरह का कोई संबन्ध नहीं था।

कुछ महीनों के बाद, मरियम का बेटा पैदा हुआ और उसका नाम यीशु रखा। जिस रात यीशु का जन्म हुआ, कुछ चरवाहे अपनी भेड़ों की रखवाली करने के लिए पास के खेतों में रुके हुए थे। अचानक परमेश्वर का एक फ़रिश्ता उनके बीच प्रकट हुआ और वे सब डर गए। फ़रिशते ने कहा, “डरो मत, मैं एक खुशख़बरी लाया हूँ, जो सब लोगों को एक महान खुशी देगी। आज वायदा किया हुआ मुक्तिदाता पैदा हुआ है।” अचानक कई और फ़रिशते उनमें शामिल हो गए और उनके साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने लगे। “परमेश्वर की महिमा हो, और धरती पर उन सभी को शान्ति मिले जिनसे परमेश्वर खुश है।” जब सब फ़रिशते चले गए, वे चरवाहे उस जगह को ढूँढने लगे जहाँ पर यीशु का जन्म हुआ था। उसको देखने के बाद, जो बातें उनको फ़रिश्तों ने बताई थी, उन्होंने सभी को बताई। जिस किसी ने भी यह सब सुना, वे सब हैरान थे।

कहानी
11

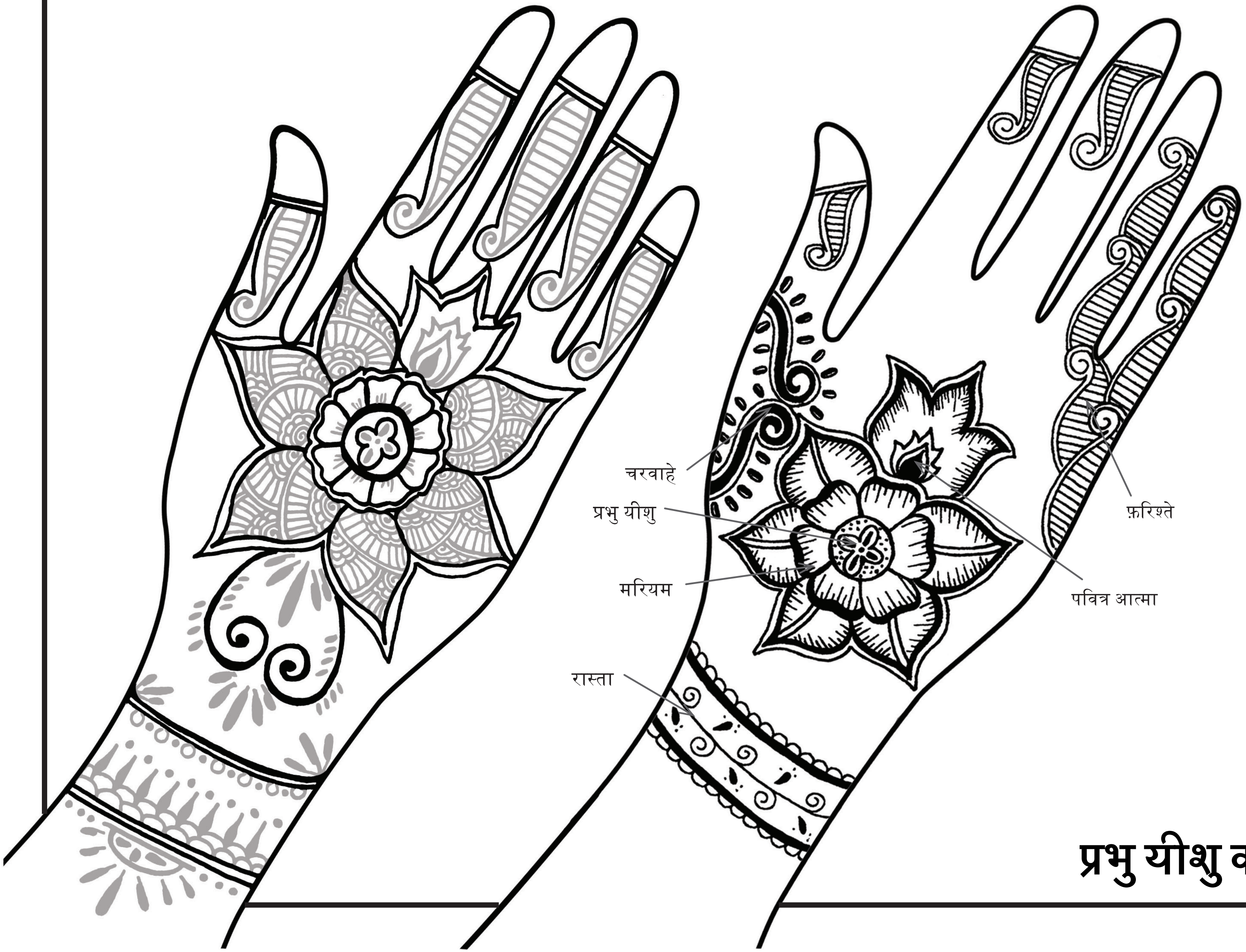

प्रभु यीशु का जन्म

कहानी
12

प्रभु यीशु का बपतिस्मा (जल दिक्षा)

यीशु जवान हो गया। परमेश्वर ने यीशु के आगे एक पैगंबर को उसका रास्ता तैयार करने के लिए भेजा ताकि लोग यीशु को मुक्तिदाता के तौर पर ग्रहण करें। उस पैगंबर का नाम यहून्ना था और वह जंगल में रहता था। यूहन्ना जगह जगह जाकर लोगों को परमेश्वर का संदेश सुनाता था। और वह लोगों को बताता था कि वे अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ें और पानी से बपतिस्मा (जल दिक्षा) लें। एक बार जब यूहन्ना बाहर संदेश सुना रहा था, कुछ धार्मिक गुरू उसका संदेश सुनने के लिए वहाँ आए। यूहन्ना ने उनको देखकर कहा, "हे साँप के बच्चो परमेश्वर के आने वाले क्रोध के बारे में तुम्हें किसने बताया है ? अपने कामों से यह साबित करो कि तुम परमेश्वर की तरफ मुड़ गए हो।" तब भीड़ ने पूछा, "हमें क्या करना चाहिए ?" यूहन्ना ने जवाब दिया, "अगर तुम्हारे पास दो कमीजें हैं तो एक गरीब को दे दो, अगर तुम्हारे पास खाना है तो उसे गरीबों के साथ बाँटो।" तब बेईमान चुंगी लेने वाले उसके पास बपतिसमा लेने आए और पूछा, "हे गुरू, हमें क्या करना चाहिए ?" यूहन्ना ने जवाब दिया कि "अपनी ईमानदारी दिखाओ और जितना सरकार चाहती है, उतना ही लोगों से लो।" फिर कुछ सैनिकों ने पूछा कि "हमें क्या करना चाहिए ?" यूहन्ना ने जवाब दिया, "न तो किसी से ज़्यादा पैसे लो और न ही बेकुसूर लोगों को तंग करो, और अपनी तनख्वाह से ही खुश रहो।" हर कोई मुक्तीदाता के जल्दी आने का इन्तज़ार कर रहा था, इसलिए वे यह जानना चाहते थे कि क्या वह मुक्तिदाता यूहन्ना ही है। यूहन्ना ने उनके सवालों का जवाब देते हुए कहा, "मैं तो पानी से बपतिस्मा (जल दिक्षा) देता हूँ, पर कोई जल्दी ही आ रहा है जो मुझसे बहुत ज़्यादा महान है, इतना महान कि मैं उसके जूते का तसमा खोलने के भी लायक़ नहीं। वह तुम्हें परमेश्वर की आत्मा से बपतिस्मा (जल दिक्षा) देगा।"

एक दिन जब भीड़ बपतिस्मा (जल दिक्षा) ले रही थी, यीशु खुद भी यूहन्ना से बपतिस्मा (जल दिक्षा) लेने आए, चाहे उन्होंने कभी कोई पाप नहीं किया था। लेकिन यूहन्ना ने उन्हे मना करने की कोशिश की। यूहन्ना ने कहा कि "मैं भी उनमें से एक हूँ, जिन्हें आप से बपतिस्मा (जल दिक्षा) लेने की ज़रूरत है, फिर आप क्यों मेरे पास आए हैं ?" पर यीशु ने उससे कहा, "यह होने दे, क्योंकि हमें वह सब कुछ करना है जो परमेश्वर चाहते हैं।" यूहन्ना बपतिस्मा (जल दिक्षा) देने के लिए मान गया। इसके बाद यीशु जैसे ही प्रार्थना करने लगे, आसमान खुल गया और एक कबूतर के रूप में परमेश्वर की आत्मा यीशु पर उतरी और आसमान से परमेश्वर की आवाज़ आई कि, "यह मेरा प्यारा बेटा है और मैं इससे बहुत खुश हूँ।

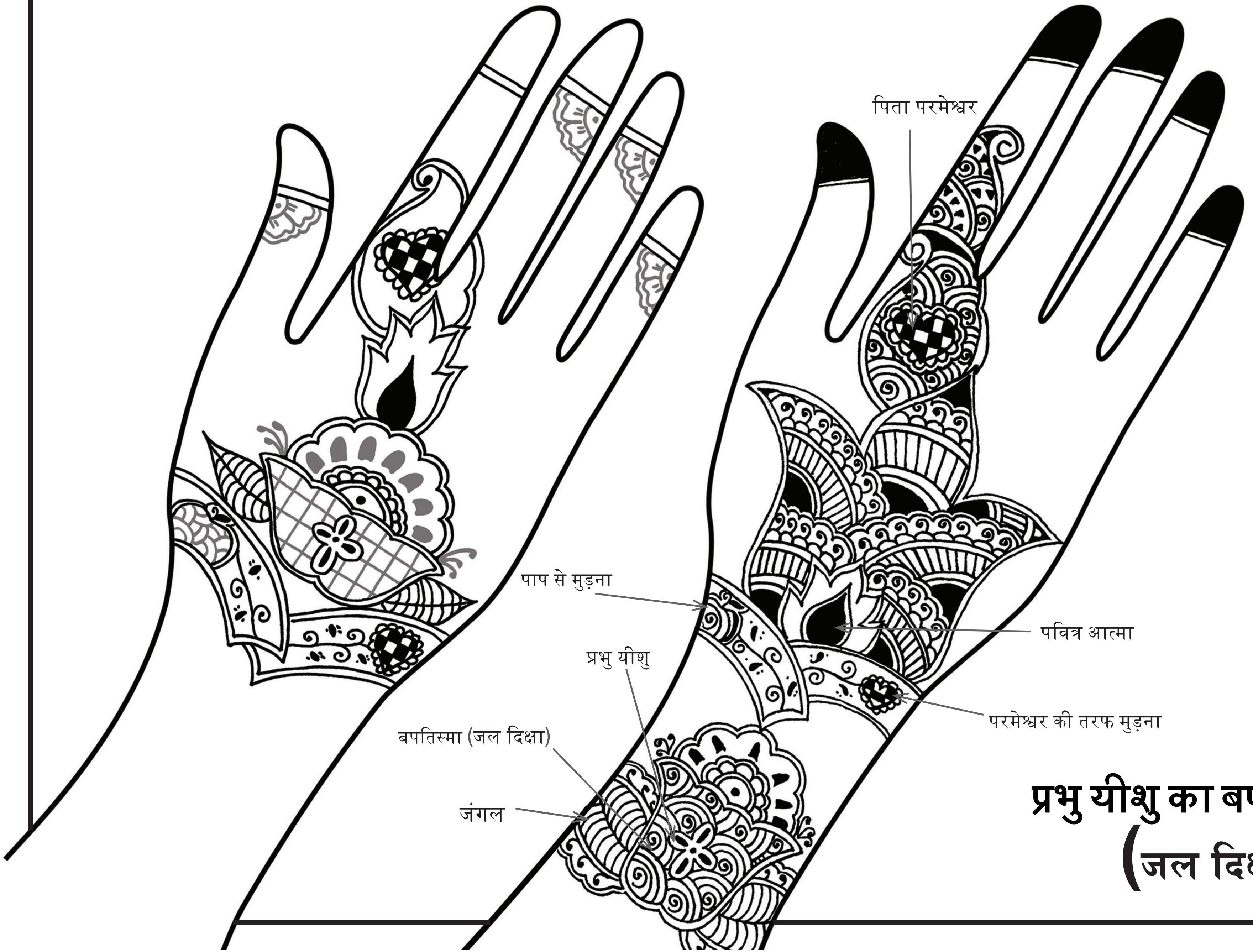

प्रभु यीशु का बपतिस्मा (जल दिक्षा)

कहानी
13

प्रभु यीशु द्वारा लोगों को जीवन देना

प्रभु यीशु ने बपतिस्मे के बाद, बारह आदमियों को अपने चेले बनाने के लिए चुना। उन्होंने जगह जगह की यात्रा की। प्रभु यीशु ने उन सब जगहों पर परमेश्वर के राज्य के बारे में प्रचार किया। बहुत सारे लोगों ने उनके पीछे चलना शुरू कर दिया।

यात्रा के दौरान प्रभु यीशु को एक दूसरे देश में से होकर गुज़रना पड़ा। प्रभु यीशु और उसके चेले उस देश के एक गाँव में से गुज़र रहे थे। उस गाँव में एक कुआँ था। प्रभु यीशु लम्बी यात्रा करके थक चुका थे। जब प्रभु यीशु के चेले खाना ख़रीदने गए हुए थे वह कुएँ के पास बैठकर आराम करने लगे। कुछ समय बाद उस देश की एक औरत कुएँ से पानी निकालने आई। प्रभु यीशु ने उस औरत से कहा, “मुझे पानी पिलाओ।” वह औरत हैरान थी क्योंकि वह जानती थी कि इब्राहीम की सन्तान के लोग उस देश के लोगों के साथ खाना पीना पसंद नहीं करते थे। वह औरत यह भी जानती थी कि प्रभु यीशु इब्राहीम की सन्तान में से है। उसने प्रभु यीशु से कहा, “आप तो इब्राहीम की सन्तान हैं और इब्राहीम की सन्तान के लोग हम लोगों से नफरत करते हैं। फिर आप मुझसे पानी क्यों मांग रहे हैं ?” प्रभु यीशु ने जवाब दिया, “अगर तुम्हें मेरा पता होता की मैं कौन हूँ तो तुम मुझ से मांगती और मैं तुझको जीवन का जल देता। जो पानी तुम पीते हो उस से तुम्हारी प्यास नहीं मिटती। इस पानी पीने के बाद जल्दी ही लोग फिर से प्यासे हो जाते हैं, पर जो पानी मैं देता हूँ, वह हमेंशा के लिए प्यास को मिटा देता है। मैं तुम्हें ऐसा पानी देता हूँ जो तुम्हें परमेश्वर के साथ असली ज़िन्दगी देता है जो कभी ख़त्म नहीं होती।” उस औरत ने कहा, “कृपा उसमें से कुछ पानी मुझे दो, तो मुझे पानी लेने के लिए यहाँ नहीं आना पड़ेगा।”

प्रभु यीशु ने कहा “ठीक है, जाओ और अपने पति को बुलाकर लाओ।” उस औरत ने जवाब दिया, “मेरा पति नहीं है।” प्रभु यीशु ने कहा, “तुम ठीक कह रही हो कि तुम्हारा पति नहीं है, लेकिन तुम पाँच पति रख चुकी हो और जिस आदमी के साथ तुम इस समय रह रही हो, वह भी तुम्हारा पति नहीं है।” उस औरत ने कहा, “आप परमेश्वर की तरफ से हैं।” तब प्रभु यीशु ने कहा, “मैं मुक्तिदाता हूँ।” तभी प्रभु यीशु के चेले भी वापस आ गए। वे प्रभु यीशु को उस विदेशी औरत के साथ बातें करते देखकर हैरान हो गए।

वह औरत अपना बर्तन कुएँ पर छोड़ कर वापस अपने गाँव चली गई और गाँव में जाकर सभी को बताया की, “आओ और उस आदमी को देखो जिसने मेरे बारे में सब कुछ बता दिया। हो सकता है कि वह मुक्तिदाता हो।” तब सभी लोग गाँव से प्रभु यीशु को देखने के लिए वहाँ आए। वह प्रभु यीशु को अपने साथ गाँव में रहने के लिए ज़ोर डालने लगे। उन्होंने उस औरत से कहा, “हमें विश्वास हो गया है, क्योंकि यह आदमी सिर्फ तुम्हारे बारे में ही नहीं, बल्कि हमारे बारे में भी सब कुछ जानता है। अब हम जान गए हैं कि वह इस संसार को बचाने वाला है।”

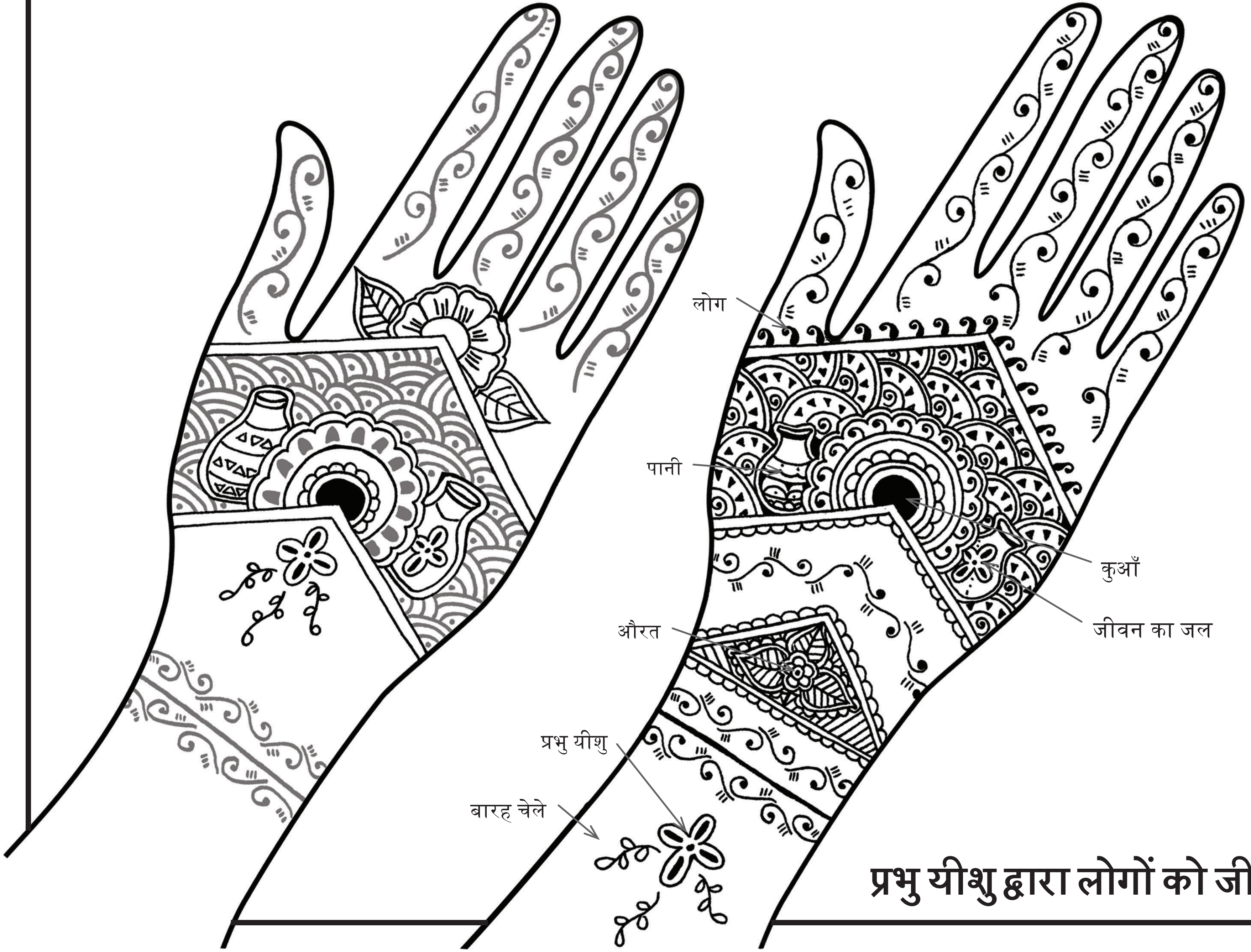

प्रभु यीशु द्वारा लोगों को जीवन देना

कहानी
14

प्रभु यीशु द्वारा एक लकवे के रोगी को ठीक करना

एक दिन प्रभु यीशु एक घर में लोगों को परमेश्वर के बारे में बता रहे थे। उस समय बहुत सारे लोग प्रभु यीशु की बातें सुनने के लिए प्रभु यीशु के पास आए। जिस घर में प्रभु यीशु थे वह घर पूरी तरह लोगों से भर चुका था।

चार आदमी जिनके एक दोस्त को लकवे की बीमारी थी। जब उन्होंने सुना कि प्रभु यीशु इस घर में वचन सुना रहे हैं तब वे अपने बीमार दोस्त को प्रभु यीशु के पास लाए। वह बीमार चारपाई पर ही रहता था और चल फिर नहीं सकता था। जिस घर में प्रभु यीशु प्रचार कर रहे थे उस घर में बहुत सारे लोग थे। यहाँ तक कि लोग बाहर के दरवाज़े तक खड़े होकर प्रभु यीशु की बातों को सुन रहे थे। वह आदमी उसको दरवाज़े से अंदर नहीं लेकर जा सकते थे। इसलिए वह घर की छत पर चढ़ गए और उन्होंने छत को खोल दिया और उन्होंने उस चारपाई को जिस पर लकवे का रोगी पड़ा था छत से नीचे प्रभु यीशु के सामने लटका दिया।

जब प्रभु यीशु ने देखा की बीमार आदमी और उसके दोस्तों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया है तो प्रभु यीशु ने कहा, “बेटा तुम्हारे सारे पाप माफ़ हुए।” उस घर में बहुत सारे धार्मिक गुरू हाज़िर थे। वे धार्मिक गुरू सोचने लगे कि यह पाप माफ़ कैसे कर सकता है ? यह ऐसा क्यों कहता है ? केवल परमेश्वर ही पापों को माफ़ कर सकते है।

प्रभु यीशु ने यह जान लिया था कि वे धार्मिक गुरू क्या सोच रहे हैं। प्रभु यीशु ने उन से कहा “सबसे आसान क्या कहना है, तुम्हारे पाप माफ़ हुए या फिर यह कहना कि उठ अपनी चारपाई उठा और चल फिर ? मैं तुम को यह बताना चाहता हूँ कि मुझे यह आधिकार दिया गया है कि मैं पाप माफ़ कर सकूँ।” तब प्रभु यीशु ने बीमार आदमी से कहा “उठ और अपनी चारपाई उठाकर अपने घर को चला जा।” वह बीमार आदमी तुरंत चारपाई उठाकर अपने घर चला गया।

वहाँ पर जितने भी लोग थे सब हैरान हो गए और कहने लगे “हम ने ऐसा चमत्कार पहले कभी नहीं देखा।”

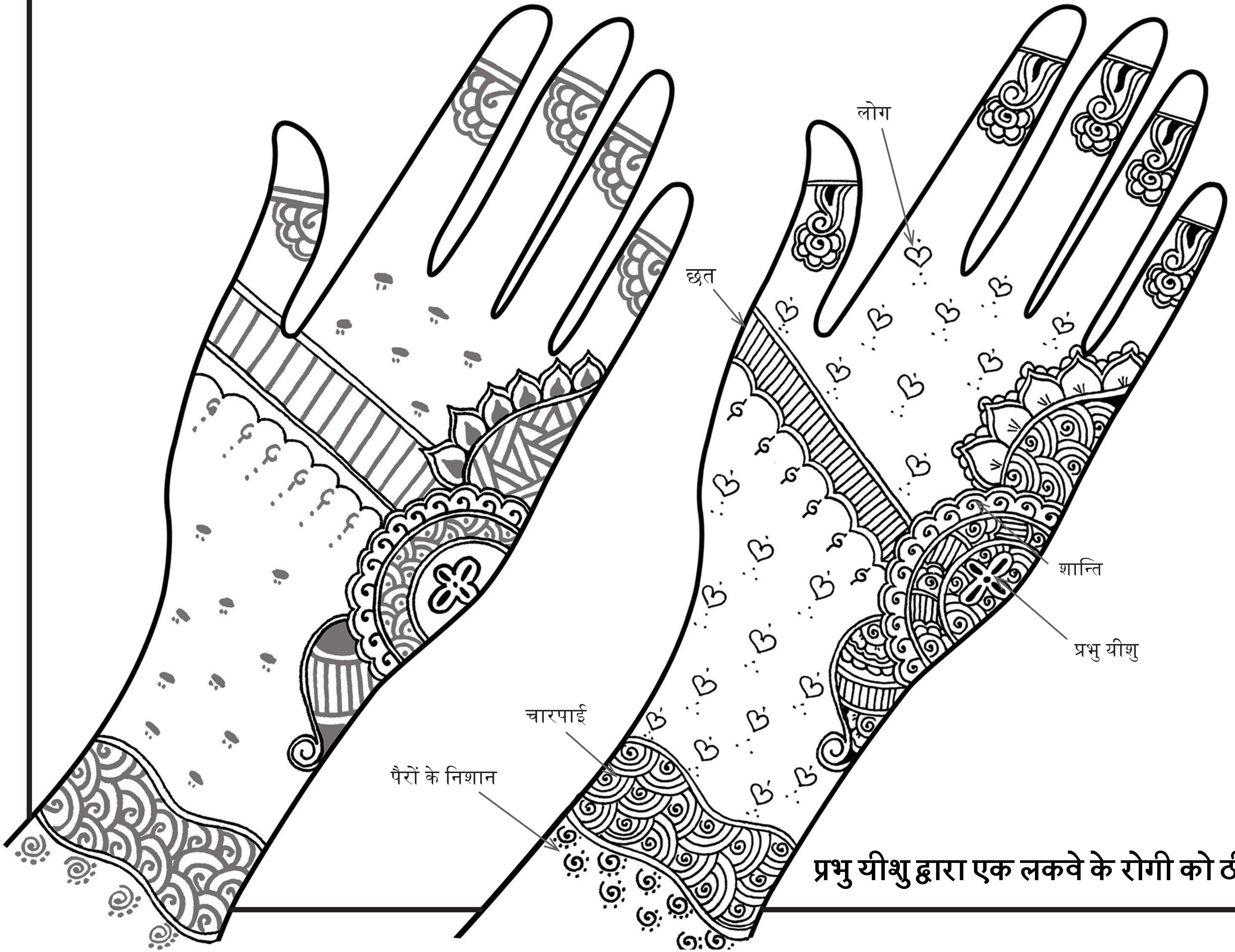

प्रभु यीशु द्वारा एक लकवे के रोगी को ठीक करना

कहानी
15

प्रभु यीशु द्वारा एक पापी औरत को माफ़ करना

एक दिन एक धार्मिक गुरू ने प्रभु यीशु को अपने घर में खाना खाने के लिए बुलाया। उस शहर में एक बदचलन औरत रहती थी। वह बहुत गलत काम करती थी। जब उसने सुना की प्रभु यीशु उस धार्मिक गुरू के घर में खाना खाने के लिए आए है तब वह उस घर के अंदर आई। वह प्रभु यीशु के कदमों में गिर पड़ी और रोने लगी। उस औरत ने प्रभु यीशु के पैरों को अपने आँसूओं से धोया और अपने बालों से साफ किया। फिर उस औरत ने प्रभु यीशु के पैरों को चुमा और उस पर खुशबूदार इत्र लगाया।

तब उस धार्मिक गुरू ने अपने मन ही मन में सोचा कि "अगर यह परमेश्वर की ओर से होता तो यह जान लेता कि यह औरत कैसे गलत काम करती है।" प्रभु यीशु ने यह मन ही मन में जान लिया कि वह क्या सोच रहा है। तब प्रभु यीशु ने उस से कहा कि "क्या तू इस औरत को देखता है ? मैं तेरे घर आया पर तूने मेरे पैर धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इस औरत ने मेरे पैर अपने आँसूओं से धोये और अपने बालों से साफ किए। मैं तुम्हारे घर पर आया तुमने मेरा स्वागत नहीं किया। पर इस औरत ने मेरा स्वागत किया, मेरे पैरों को चूमा और महँगा इत्र मेरे पैरों पर लगाया।"

प्रभु यीशु ने उस धार्मिक गुरू से कहा "जिसके ज़्यादा पाप माफ़ हुए, वह ज़्यादा प्यार करता है, जिसके कम पाप माफ़ हुए, वह कम प्यार करता है।" फिर यीशु ने उस औरत को देखा और कहा "हे बेटी तेरे पाप माफ़ हुए, तेरे विश्वास ने तूझे बचा लिया। शान्ती से जाओ।"

कहानी
15

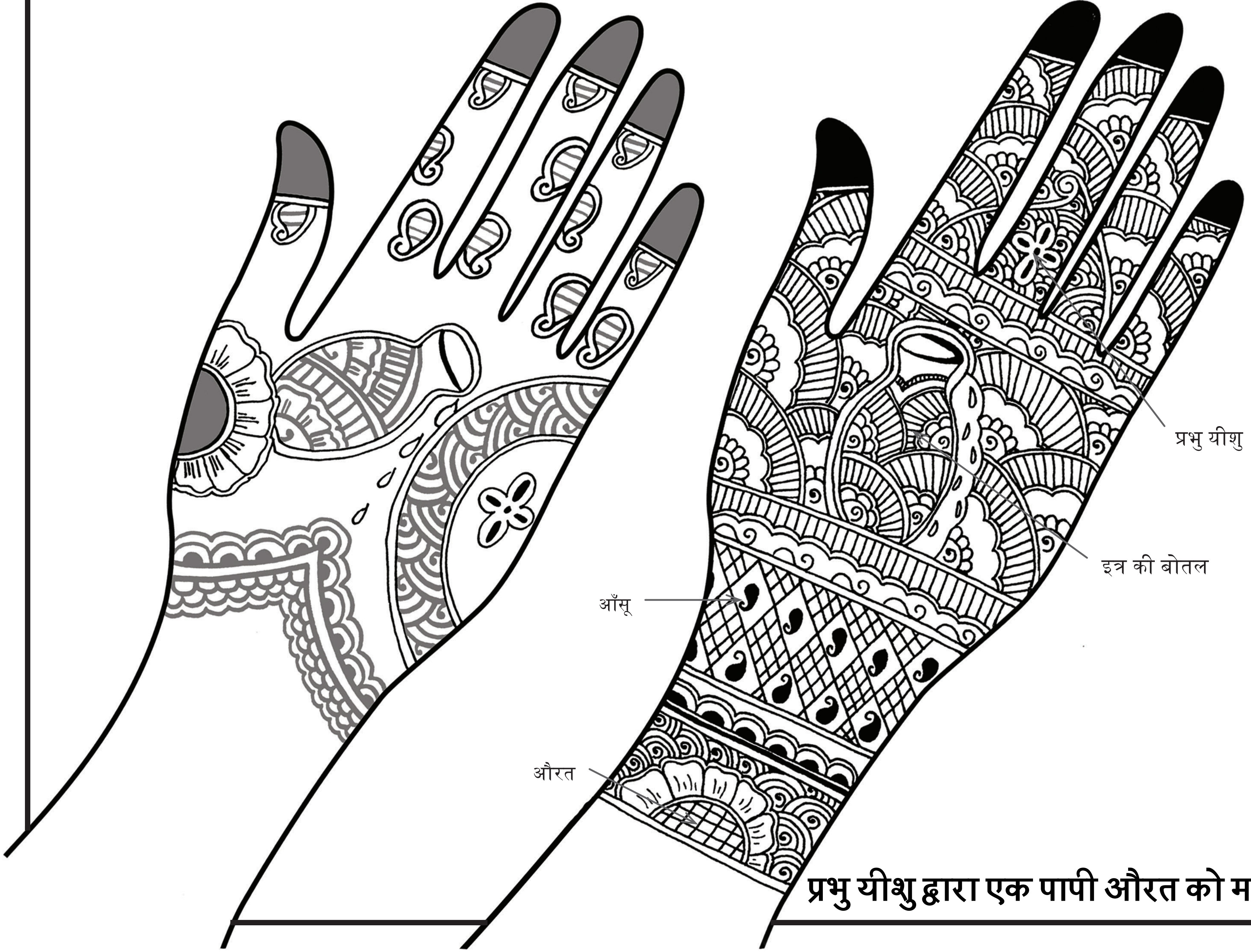

प्रभु यीशु द्वारा एक पापी औरत को माफ़ करना

कहानी
16

तूफ़ान को शान्त करना

एक दिन प्रभु यीशु और उसके चेले किश्ती में सवार हो कर झील को पार करने लगे। प्रभु यीशु उस समय सो रहे थे। उसी समय बहुत ही तेज़ तूफ़ान आया। आँधी चली, लहरे उठी और उन की किश्ती पानी में डूबने लगी। यीशु के चेलो ने यीशु को उठाया और चिल्लाने लगे, "हे गुरू - हे गुरू, हमें बचाओ - हमें बचाओ। क्योंकि हम डूब रहे हैं।"

उसी वक्त प्रभु यीशु उठे और अपने चेलों को कहा, "हे कम विश्वास रखने वाले लोगो, तुम क्यों डरते हो।" तब प्रभु यीशु ने आँधी और तूफ़ान को डाँटा और कहा, "शान्त हो जाओ।" उसी समय आँधी और तूफ़ान शान्त हो गए। प्रभु यीशु के चेलों ने हैरानी से कहा कि "यह कौन है कि आँधी और तूफ़ान भी इसका हुक्म मानते हैं।

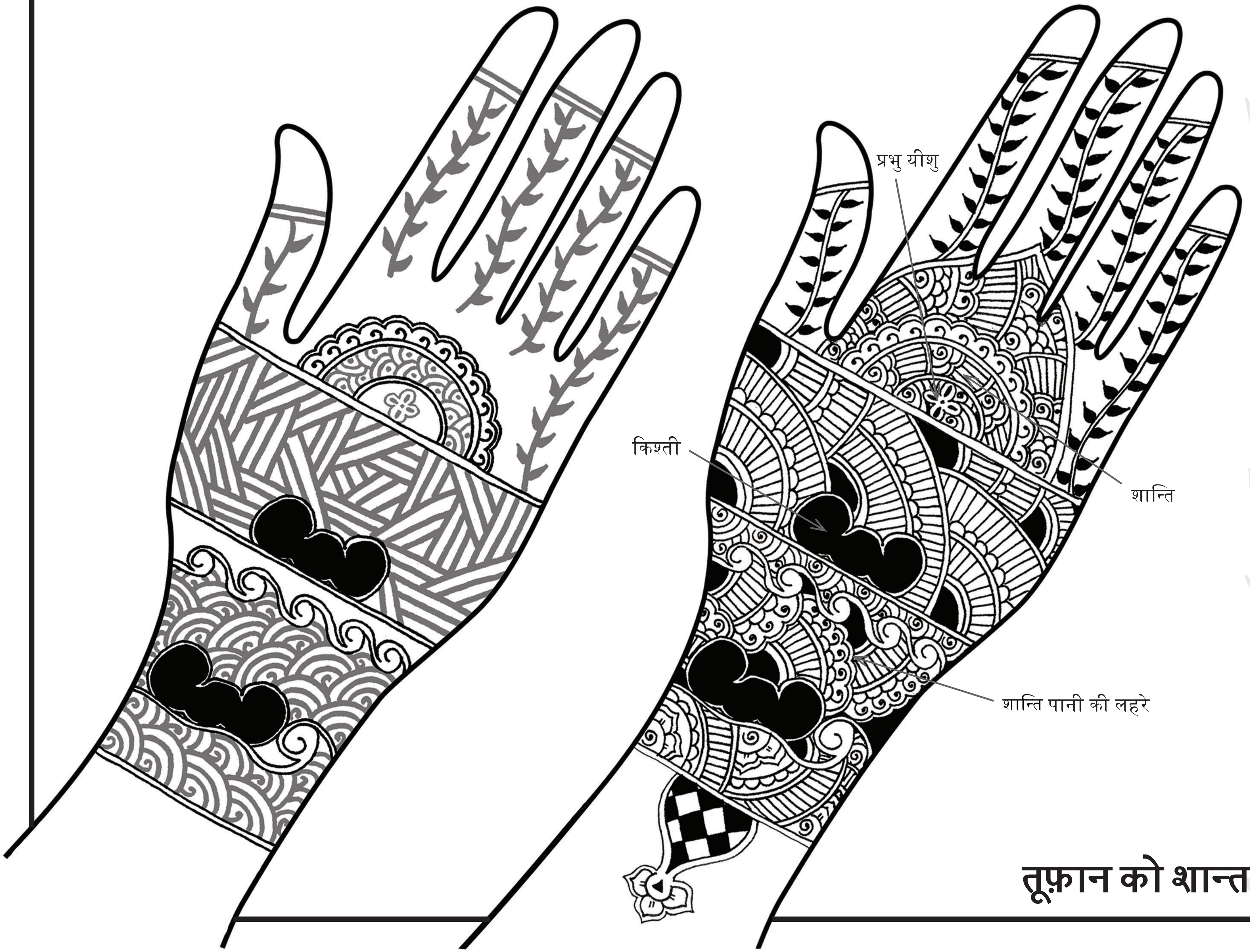

तूफ़ान को शान्त करना

कहानी
17

बुरी आत्मा से पीड़ित आदमी को चंगा करना

एक दिन प्रभु यीशु और उसके चेले किश्ती में बैठकर एक झील को पार कर रहे थे। जब वे किश्ती से नीचे उत्तरे तब एक आदमी ने प्रभु यीशु को दूर से अपनी तरफ आते देखा। उस आदमी में बुरी आत्मा थी। वह आदमी गाँव से बाहर रहता था। वह इधर-उधर भागता, चिल्लाता और अपने आप को पत्थरों से मार था। जब कभी भी गाँव के लोगों ने उसे बाँधना चाहा उसने ज़ंजीरों को भी तोड़ दिया। कोई भी उसको रोक नहीं सकता था।

उस आदमी ने जब प्रभु यीशु को देखा तब वह प्रभु यीशु की तरफ भागा और उसके पैरों पर गिर गया। आदमी के अंदर की बुरी आत्मा ने कहा "हे महान पर के पुत्र, तुझे मुझ से क्या काम है ?"

प्रभु यीशु ने आदमी को देखा और पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?" आदमी के अंदर की बुरी आत्मा ने कहा "सेना क्योंकि हम बहुत हैं। हमें यहाँ से दूर न भेज, आज्ञा दे की हम पास के जानवरों में चले जाए।" तब प्रभु यीशु ने उन बुरी आत्माओं को कहा कि "इस आदमी को छोड़कर चले जाओ।" जल्दी ही सारी बुर आत्माएँ जानवरों में चली गई। और सारे जानवर भागने लगे, पहाड़ से नीचे एक झील में गिर गए और पानी में डूब गए।

वहाँ खड़े आदमियों ने जो कुछ भी हुआ सब कुछ देखा। वे गाँव को भाग गए और जाकर लोगों को बताया। जब गाँव के लोग वहाँ पहुँचे तब उन्होंने देखा वि वह आदमी प्रभु यीशु के साथ बैठा था। इसलिए वे डर गए। वे लोग प्रभु यीशु को कहने लगे "आप यहाँ से चले जाओ।" जब प्रभु यीशु वहाँ से जाने लगे, वह आदमी जो बुरी आत्मा से चंगा हुआ था प्रभु यीशु से कहने लगा, "मुझे अपने पीछे आने दो।"

प्रभु यीशु ने कहा "नहीं, अपने घर को चला जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे साथ किया उन्हें सब कुछ बता।" वह आदमी वापस चला गया। उसने सिर्फ अप परिवार को ही नहीं परन्तु अपने इलाके के दस शहरों के लोगों को भी बताया। जितने लोगों ने भी उसकी बातें सुनी, वे सब हैरान हो गए।

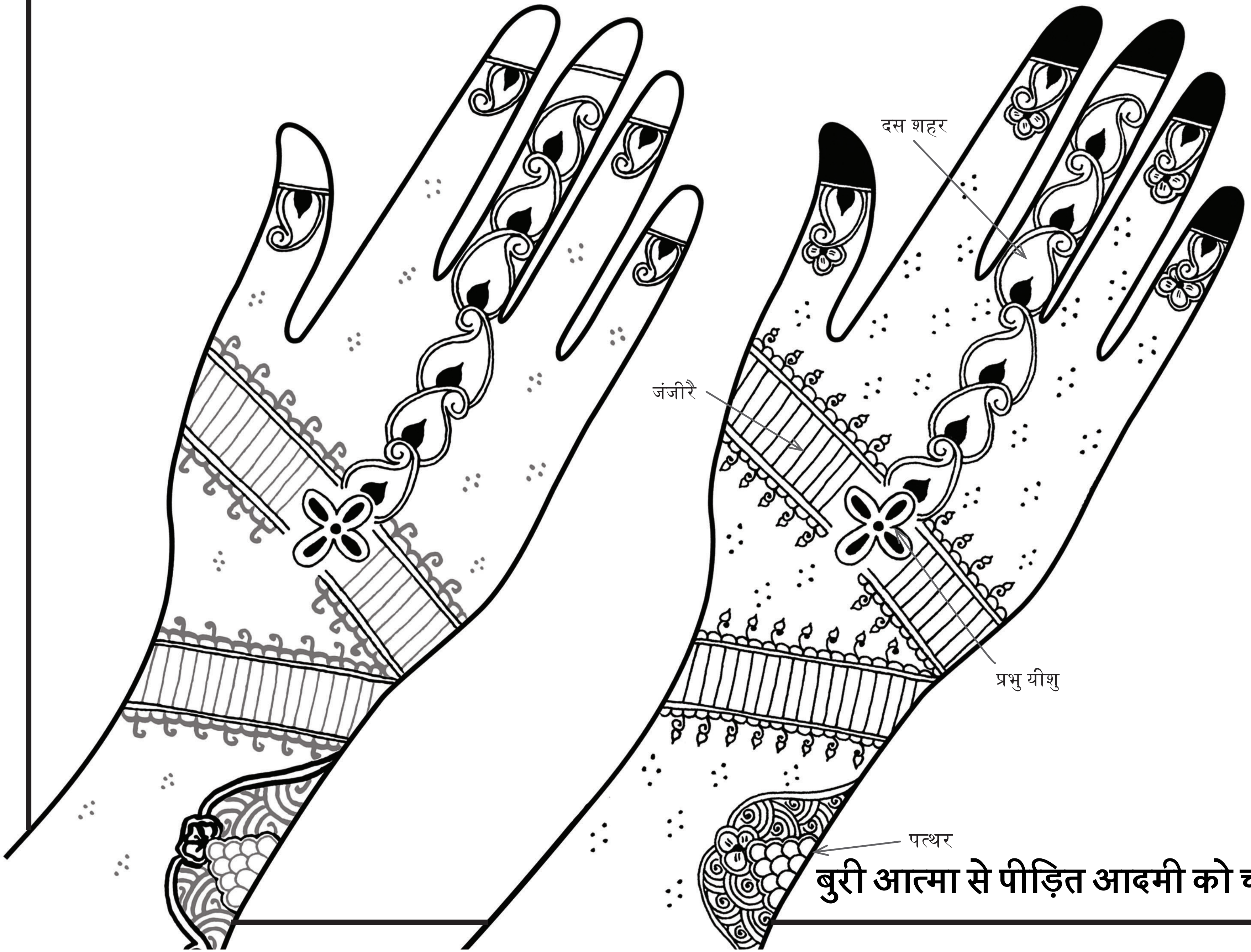

बुरी आत्मा से पीड़ित आदमी को चंगा करना

कहानी
18

बारह साल पुरानी बीमारी से चँगाई

प्रभु यीशु और उसके चेले एक शान्त जगह पर आराम करने के लिए रूके। लेकिन एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु को देखकर उसके पीछे आ गई। जब प्रभु यीशु ने उन लोगों को देखा उसको उन लोगों पर बड़ा तरस और प्यार आया। तब प्रभु यीशु ने उस भीड़ में से बहुत सारे बीमारों को चंगा किया।

शाम के समय प्रभु यीशु के चेलों ने आकर प्रभु यीशु से कहा कि “हमें इन लोगों को वापस इनके घरों में भेज देना चाहिए ताकि वे कुछ खाना खा सकें।”

लेकिन प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा “तुम इनको खाने के लिए कुछ दो।”

तब चेलों ने जवाब दिया। “हमारे पास सिर्फ दो मछलियाँ और पाँच रोटियाँ हैं।”

प्रभु यीशु ने कहा कि “ठीक है। जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह मेरे पास लाओ।”

तब प्रभु यीशु ने सब लोगों को बैठने के लिए कहा। प्रभु यीशु ने खाने के लिए परमेश्वर को धन्यावाद दिया और उस रोटी को तोड़कर अपने चेलों को दी कि वे उसे उन लोगों में बाँट दे। जब सारी भीड़ ने भर पेट खाना खा लिया तब प्रभु यीशु के चेले बची हुई रोटी और मछली इकट्ठा करने लगे। उन्होंने बचे हुए खाने की बारह टोकरियाँ इकट्ठी की। खाने वालो की गिनती में औरतों और बच्चों को निकालकर केवल मर्दों की गिनती ही पाँच हज़ार थी।

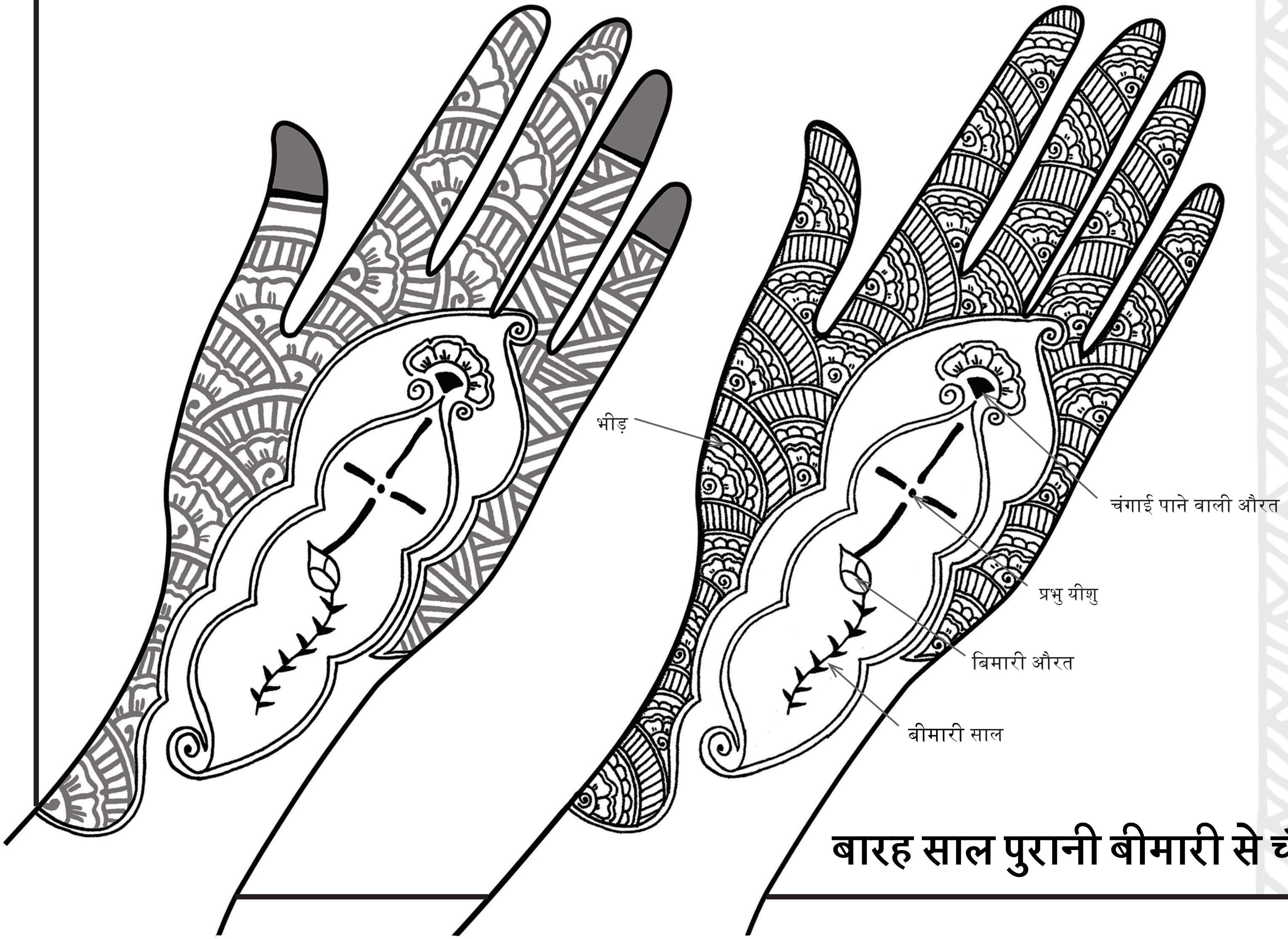

बारह साल पुरानी बीमारी से चँगाई

कहानी
19

पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाना

प्रभु यीशु और उसके चेले एक शान्त जगह पर आराम करने के लिए रूके। लेकिन एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु को देखकर उसके पीछे आ गई। जब प्रभु यीशु ने उन लोगों को देखा उसको उन लोगों पर बड़ा तरस और प्यार आया। तब प्रभु यीशु ने उस भीड़ में से बहुत सारे बीमारों को चंगा किया।

शाम के समय प्रभु यीशु के चेलों ने आकर प्रभु यीशु से कहा कि “हमें इन लोगों को वापस इनके घरों में भेज देना चाहिए ताकि वे कुछ खाना खा सकें।”

लेकिन प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा “तुम इनको खाने के लिए कुछ दो।”

तब चेलों ने जवाब दिया। “हमारे पास सिर्फ दो मछलियाँ और पाँच रोटियाँ हैं।”

प्रभु यीशु ने कहा कि “ठीक है। जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह मेरे पास लाओ।”

तब प्रभु यीशु ने सब लोगों को बैठने के लिए कहा। प्रभु यीशु ने खाने के लिए परमेश्वर को धन्यावाद दिया और उस रोटी को तोड़कर अपने चेलों को दी कि वे उसे उन लोगों में बाँट दे। जब सारी भीड़ ने भर पेट खाना खा लिया तब प्रभु यीशु के चेले बची हुई रोटी और मछली इकट्ठा करने लगे। उन्होंने बचे हुए खाने की बारह टोकरियाँ इकट्ठी की। खाने वालो की गिनती में औरतों और बच्चों को निकालकर केवल मर्दों की गिनती ही पाँच हज़ार थी।

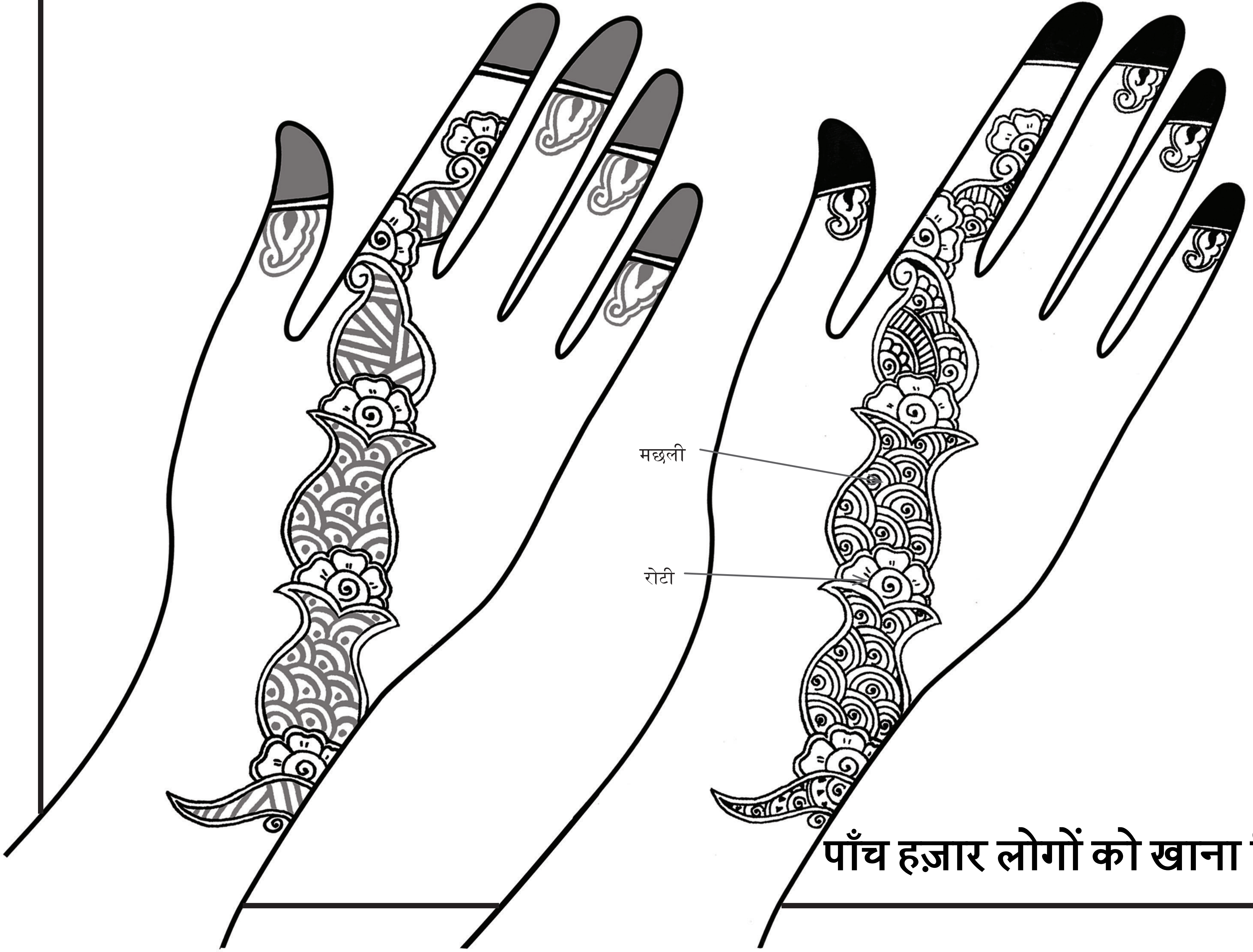

पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाना

कहानी
20

एक अनआज्ञाकारी बेटे की कहानी

चुंगी लेने वाले लोग और बहुत से पापी लोग प्रभु यीशु की शिक्षा को सुनते थे। तभी धार्मिक गुरूओं ने इस बात पर शिकायत की कि प्रभु यीशु पापियों के साथ क्यों दोस्ती करता और खाता है। तभी प्रभु यीशु ने धार्मिक गुरूओं को यह कहानी सुनाई।

एक बार एक इन्सान के दो बेटे थे। उनमें से छोटा बेटा अपने पिता के पास आया और कहने लगा कि "पिता जी मेरे हिस्से का पैसा मुझे दे दो।" तभी उसके पिता ने उस को उसके हिस्से का पैसा दे दिया। उसने पैसा लिया और दूर देश में चला गया और वहाँ पर उसने मौज मस्ती कर के सारा पैसा उड़ा दिया। तभी उस देश में अकाल भी पड़ गया। वह लड़का भूखा मरने लगा। फिर उसने किसी के घर जानवर चराने की नौकरी करनी शुरु कर दी। वह सारा दिन खेतों में जानवर चराता था। जो खाना जानवर खाते थे उसी खाने से वह भी अपना पेट भरना चाहता था, क्योंकि कोई भी उसको खाने के लिए कुछ नहीं देता था। एक दिन उस ने होश संभाला और सोचा की मेरे पिता के घर में बहुत सारे नौकर हैं जो बहुत अच्छा खाना खाते हैं। क्यों न मैं भी अपने पिता के पास वापस जाऊँ। और उस से कहूँ "मुझे माफ़ कर दे और मुझे अपने बेटे की तरह नहीं, परन्तु एक नौकर की तरह ही अपने पास रख ले, ताकि मैं अच्छा खाना खा सकूँ।"

वह अपने पिता के घर वापस आया और अपने पिता के सामने गिर कर कहने लगा कि "मैंने तेरे और परमेश्वर के खिलाफ़ पाप किया है। मैं इस लायक नहीं हूँ की मैं तेरा बेटा कहला सकूँ। लेकिन फिर भी मुझे अपने एक नौकर की तरह रख ले।" पिता ने उस को उठाया और गले से लगाया और अपने नौकरों को हुक्म दिया "तुम जाओ और इस के लिए बहुत अच्छे कपड़े ले कर आओ इस के लिए नये जूते और इस के हाथों में अँगूठी पहनाओ।" तब उसको बहुत सुन्दर कपड़े पहनाए गए और फिर जशन मनाया गया। जब उस अदमी के बड़े बेटे ने यह सब कुछ देखा, उसने अपने नौकर से पूछा कि "यह क्या हो रहा है ?" नौकर ने उसको बताया कि "तेरा भाई जो खो गया था वह वापस आया है।" यह सुनकर वह बहुत गुस्से से भर गया और अपने पिता से कहने लगा कि "मैं तेरे साथ वफ़ादार रहा तेरे साथ काम किया। लेकिन मेरे लिए आज तक कभी कोई खुशी नहीं मनाई गई। पर तेरा कहना ना मानने वाला यह बेटा जो वापस घर आ गया हैं उस के लिए तू खुशी मना रहा है।" पिता ने बेटे से कहा कि "बेटा तू हमेशा मेरे साथ था और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। हमें इस बात से खुशी होनी चाहिए कि यह तेरा भाई जो मर गया था, अब जी उठा है। जो खो गया था अब मिल गया है।"

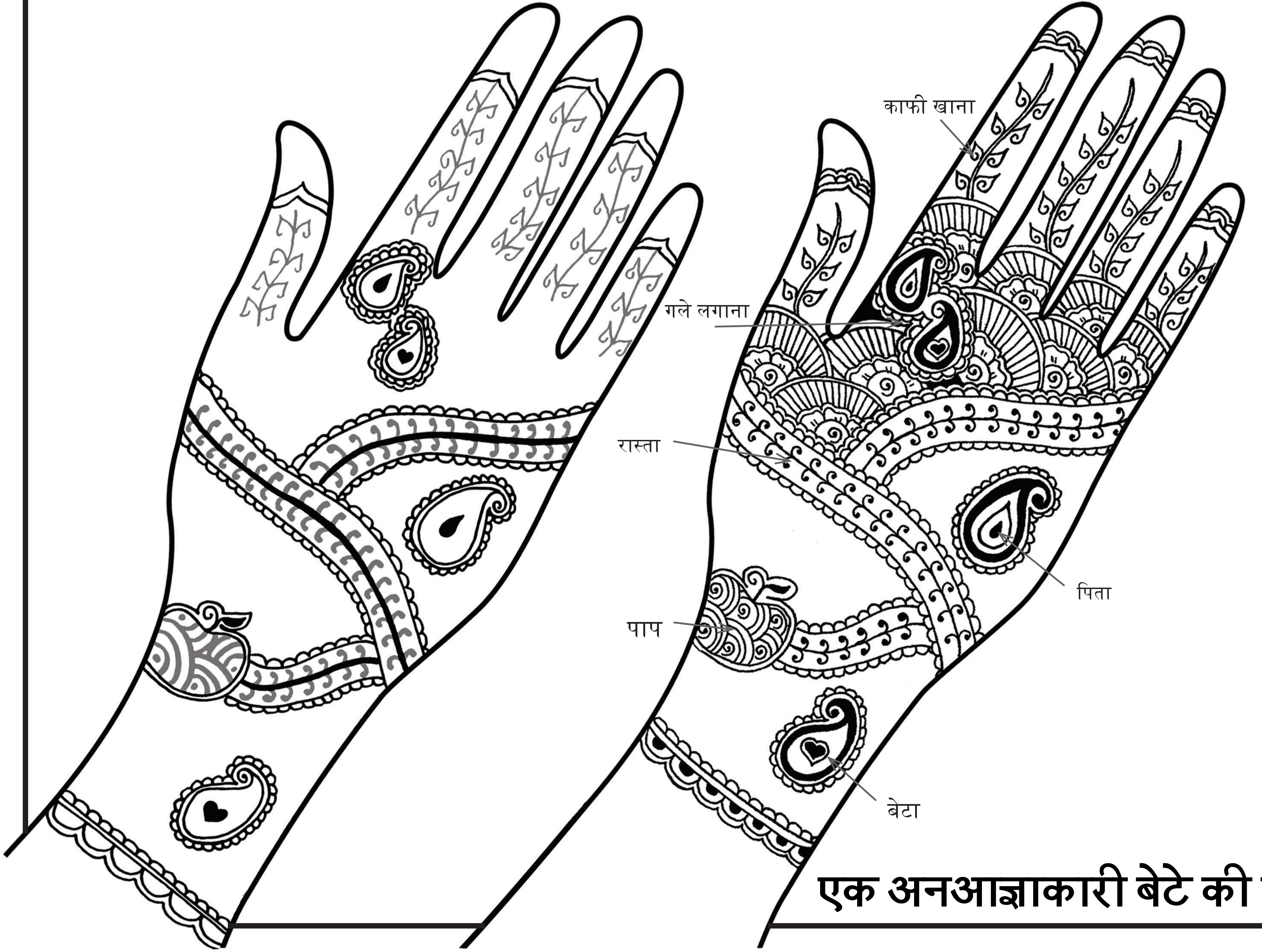

एक अनआज्ञाकारी बेटे की कहानी

कहानी
21

प्रभु यीशु की मौत

धार्मिक गुरू प्रभु यीशु की शिक्षा और उसके कामों की वजह से बहुत गुस्सा हो गए। वे उसके पीछे चलने वालों से भी जलन करने लगे। धार्मिक गुरूओं ने प्रभु यीशु के एक करीबी चेले से मिलकर प्रभु यीशु को पकड़ने की योजना बनाई।

एक रात प्रभु यीशु अपने चेलों के साथ बगीचे में प्रार्थना कर रहे थे। तभी लोगों की भीड़ तलवारें और लाठियाँ लेकर वहाँ आई और उन्होंने प्रभु यीशु को पकड़ लिया। प्रभु यीशु के सारे चेले उसे छोड़कर भाग गए। वे लोग प्रभु यीशु को पकड़कर उस देश के आधिकारियों के पास ले गए। उन आधिकारियों ने प्रभु यीशु से पूछा "क्या तू वायदा किया हुआ मुक्तीदाता है ?" प्रभु यीशु ने जवाब दिया, "हाँ मैं हूँ।"

तभी वहाँ पर खड़ी भीड़ ने चिल्लाना शुरु कर दिया "इसे मारो, इसे मारो !" आख़िर में आधिकारी ने प्रभु यीशु को मारने की सज़ा दी। सिपाहियों ने प्रभु यीशु को पकड़ा और कोड़े मारे। फिर वह प्रभु यीशु को उस स्थान पर ले गए जहाँ पर उसे सलीब पर चढ़ाया जाना था। प्रभु यीशु को लकड़ी की दो पट्टीयों पर, दोनो हाथों और पैरों में कील ठोक कर सलीब पर चढ़ा दिया गया। और सलीब को खड़ा कर दिया गया। यह दोपहर का समय था। तीन बजे हुए थे। उस समय पूरी धरती पर अंधेरा हो गया। तभी प्रभु यीशु चिल्लाए, "हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सोंपता हूँ।" यह कह कर प्रभु यीशु ने अपने प्राण त्याग दिये।

प्रभु यीशु का एक दोस्त धार्मिक गुरू के पास गया और उसने प्रभु यीशु की लाश को लेने की विनती की। उसने प्रभु यीशु के शरीर को सलीब से नीचे उतारा और कपड़े में लपेट कर पत्थरों से बनी एक नई क़ब्र में रखा। उसने उस क़ब्र को बड़े पत्थर से बन्द कर दिया। जब प्रभु यीशु की लाश को रख दिया गया। कुछ औरतें जो प्रभु यीशु के पीछे चलती थी प्रभु यीशु को देखने क़ब्र पर गई। क़ब्र के दरवाजे पर एक भारी पत्थर लगा था। यह देखकर वे औरतें अपने घर वापस आई और आकर अपने रीति रिवाज़ के अनुसार प्रभु यीशु के शरीर पर लगाने के लिए कुछ मसालें बनाने लगी।

पर जब उन्होंने अपना काम ख़त्म किया तब उनका धार्मिक दिन शुरू होने वाली थी। इसलिए धार्मिक कानून के अनुसार वे क़ब्र पर नहीं जा सकती थी। फिर उन्होंने फ़ैसला किया कि वे धार्मिक दिन से अगले दिन क़ब्र पर मसाले लेकर जाएँगी।

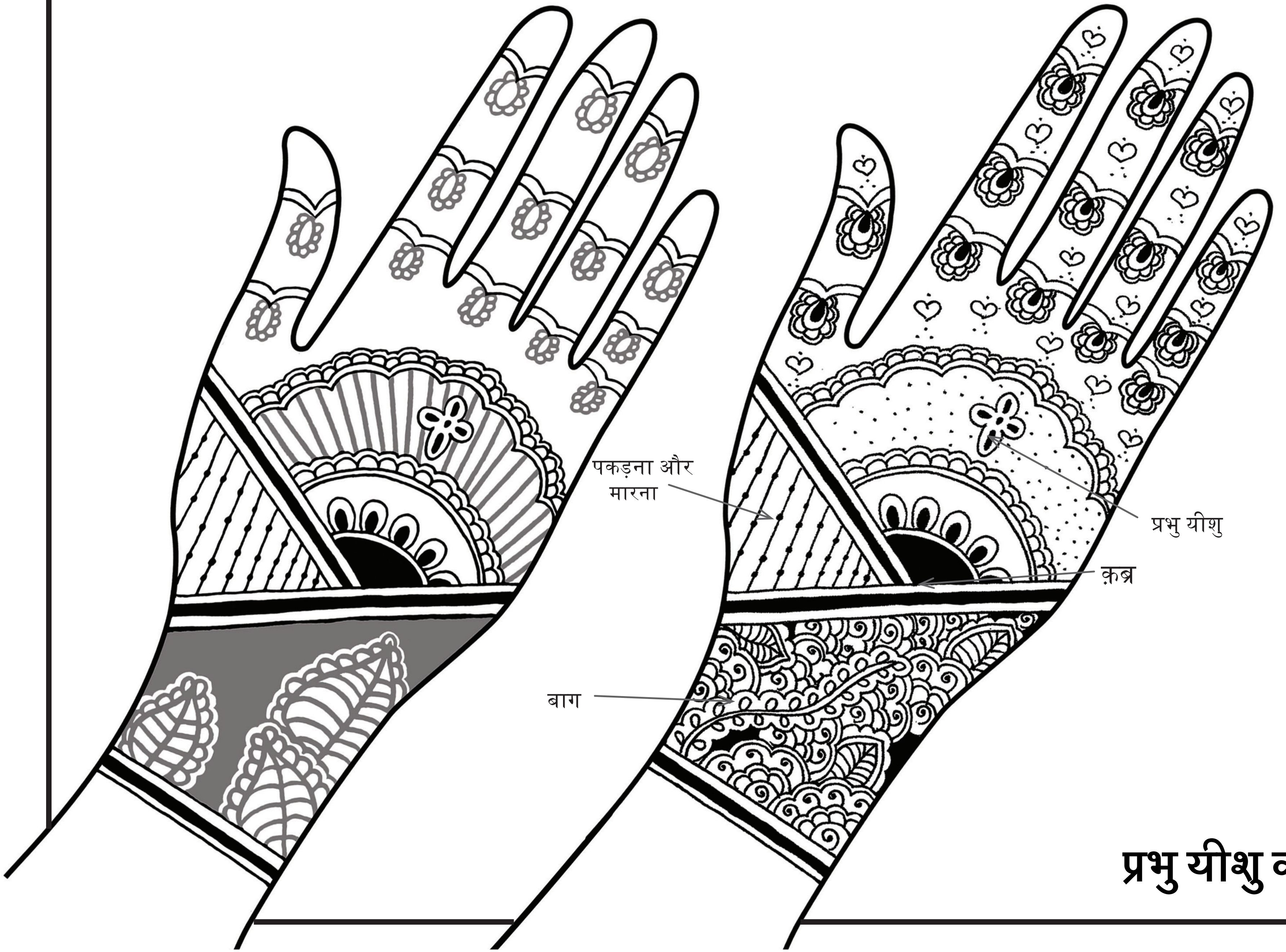

प्रभु यीशु की मौत

कहानी
22

प्रभु यीशु का जी उठना

प्रभु यीशु की मौत के बाद कुछ औरतें इतवार के दिन सुबह के समय अपने रीति रिवाजों के अनुसार प्रभु यीशु की क़ब्र पर आई। वे औरतें प्रभु यीशु के मृत्क शरीर पर लगाने के लिए कुछ मसाले लाई थी। जब वे क़ब्र पर पहुँची तो उन्होंने देखा कि क़ब्र के दरवाज़े पर लगा पत्थर दरवाज़े से हटा हुआ था। उन्होंने अंदर जाकर देखा कि प्रभु यीशु का शरीर क़ब्र में नहीं है। यह देखकर वे औरतें घबरा गई। तभी अचानक उनके सामने दो फ़रिशते हाज़िर हुए और उन औरतों से कहने लगे "तुम जो ज़िन्दा है उसे क़ब्र में क्यों ढुंढ रही हो ?" तब फ़रिश्तों ने उन औरतों को बताया कि "प्रभु यीशु मौत से जीत चुका है।" उन्होंने कहा कि "याद करो जब प्रभु यीशु ने कहा था कि वह लोगों के हाथों में पकडवाया जाएगा और सलीब पर चढ़ाया जाएगा और अपनी मौत के बाद तीसरे दिन जी उठेगा।"

कुछ समय के बाद प्रभु यीशु के चेले इकट्ठे होकर इस बारे में बातें कर रहे थे। तभी अचानक प्रभु यीशु खुद उनके बीच में आकर खड़े हो गए और कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" प्रभु यीशु को वहाँ देखकर वे सभी लोग डर गए। फिर प्रभु यीशु ने उन से कहा "तुम शक क्यों कर रहे हो ? मैं भूत नहीं हूँ। तुम मेरे हाथों को देखो, मेरे पैरों को देखो और विश्वास करो की मैं भूत नहीं हूँ। क्योंकि भूत का शरीर नहीं होता।" तब प्रभु यीशु ने उनको और भी पक्का यकीन करवाने के लिए उनके साथ खाना भी खाया। इस सब के बाद प्रभु यीशु ने चेलों को समझाया कि "यह सब परमेश्वर की योजना थी। कि मैं दु:ख उठाँऊ मारा जाऊँ और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठूँ।

प्रभु यीशु के ज़िन्दा होने के कुछ दिनों के बाद एक दिन प्रभु यीशु अपने चेलों के साथ शहर से बाहर एक पहाड़ पर गए। वहाँ प्रभु यीशु ने उन से कहा "मैं अब जाता हूँ लेकिन मैं तुम्हारे लिए पवित्र आत्मा मददगार के तौर पर भेजूँगा। जब तुम पवित्र आत्मा पाओगे तो तुम्हें शक्ति मिलेगी। तुम धरती के कोने-कोने तक मेरे गवाह ठहरोगे। और सभी लोगों को मेरे बारे में बताओगे।"

यह कहने के बाद चेलों के देखते-देखते प्रभु यीशु बादलों में उठा लिए गए। इसके बाद चेले प्रभु यीशु को नहीं देख सके। फिर एक फ़रिश्ता उनके बीच में आया और बोला कि "तुम आसमान को क्यों देख रहे हो ? प्रभु यीशु को तुम्हारें बीच में से स्वर्ग में उठा लिए गए हैं, लेकिन एक दिन इसी तरह तुम उन्हे वापस आते हुए देखोगे।"

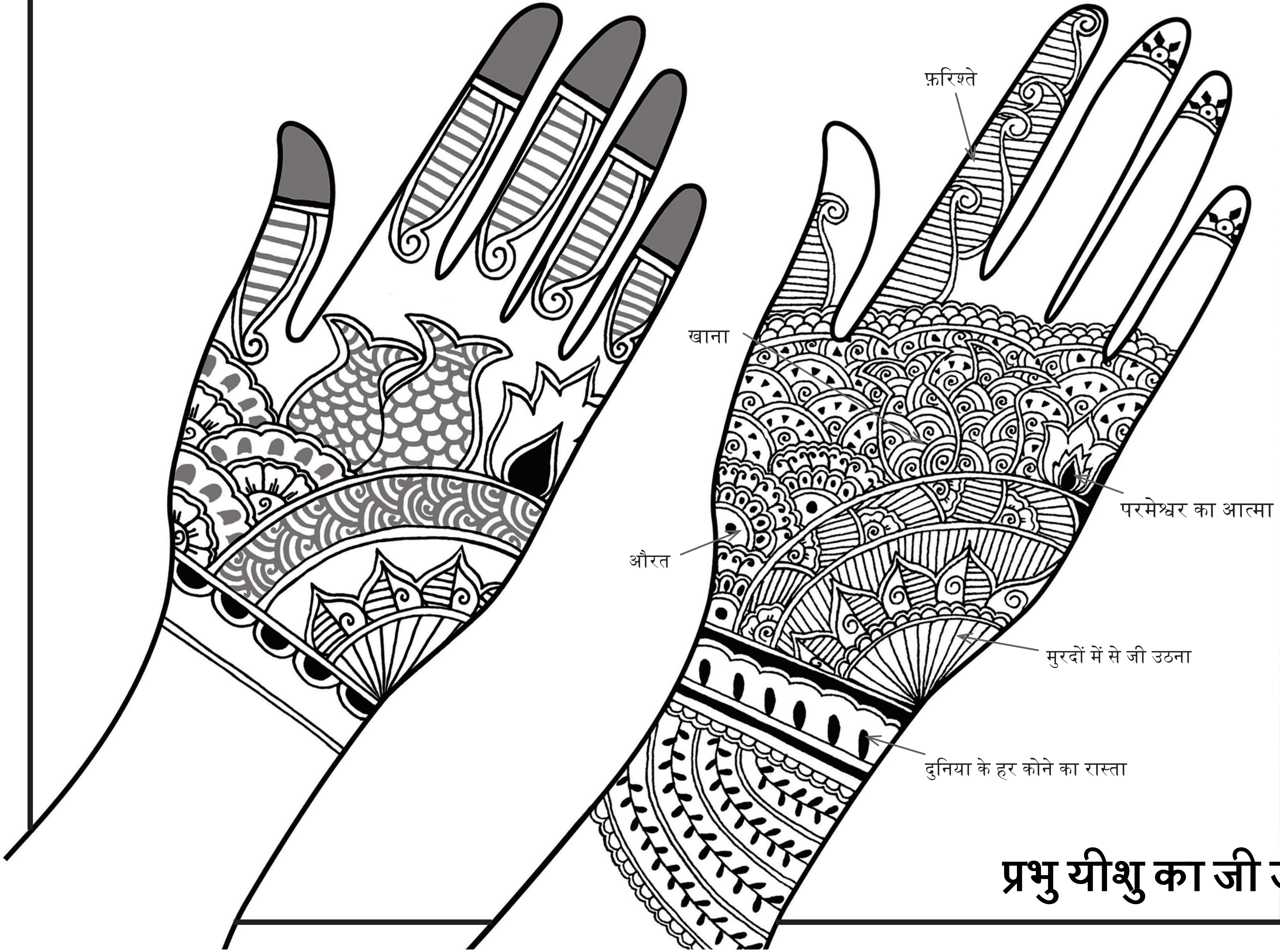

प्रभु यीशु का जी उठना

कहानी
23

पवित्र आत्मा का आना

प्रभु यीशु की आज्ञा के अनुसार उसके चेले उसी शहर में ठहरकर वायदा की गई पवित्र आत्मा का इन्तज़ार कर रहे थे। प्रभु यीशु के मुरदे में से जी उठने के सात हफतों के बाद एक धार्मिक त्योहार के दिन प्रभु यीशु के चेले एक घर में इक्टठे हुए। अचानक वहाँ पर तूफ़ान के गरजने की आवाज़ आई और यह आवाज उस पूरे घर में भर गई। फिर उन्होंने आग की जैसे जीभें अपने ऊपर उतरते देखी। वहाँ पर मौजूद हर एक जन परमेश्वर की आत्मा से भर गया और अलग-अलग भाषाओं में बातें करने लगे। त्योहार मनाने के लिए पूरी दुनिया से लोग वहाँ आए हुए थे। उन्होंने उनकी बातें सुनी और कहने लगे, “ये लोग यहाँ के हैं लेकिन हमारी ही भाषा में परमेश्वर की अदभुत बातें कर रहे हैं।” वे हैरान थे कि यह सब कैसे हो सकता है ? लेकिन भीड़ में से कुछ लोगों ने मज़ाक किया कि ये नशे में हैं।

तब प्रभु यीशु के एक चेले ने आगे बढ़कर भीड़ से कहा “तुम में से कुछ लोग यह कह रहे है कि हमने शराब पी हुई है। यह सच नहीं है। सुबह के नौ बजे कोई शराब नहीं पीता। जो कुछ भी आज तुमने देखा उसकी भविष्यवाणी सदियों पहले हो चुकी थी। सुनो जैसा कि तुम जानते हो कि प्रभु यीशु ने इस धरती पर रहते हुए बहुत बड़े-बड़े काम किए। और वह परमेश्वर का प्यारा था। लेकिन तुम लोगों ने उसे मार डाला। फिर भी परमेश्वर ने दुबारा उसे ज़िन्दा कर दिया। अभी वह स्वर्ग में बड़े आदर से परमेश्वर की दाहिनी तरफ बैठा है। जैसे की प्रभु यीशु ने स्वर्ग में जाने से पहले हमारे साथ वायदा किया था कि वह हम पर परमेश्वर की आत्मा भेजेंगे। आज उस ने यह वायदा पूरा किया और हमें पवित्र आत्मा से भर दिया। परमेश्वर ने प्रभु यीशु को जिसको तुमने मार डाला, प्रभु और मुक्तिदाता बना दिया है।

प्रभु यीशु के चेले के इन शब्दों ने भीड़ को गहरा कायल कर दिया और उन्होंने चेले से पूछा “हे भाई हम क्या करें ?” उसने जवाब दिया, “तुम में से हर एक को अपने अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ना होगा, और अपने पापों की माफ़ी के लिए वायदा किए हुए मुक्तिदाता यीशु के नाम से बपतिस्मा (जल दिक्षा) लेना होगा। तब तुम परमेश्वर की आत्मा का वरदान पाओगे। यह वायदा तुम्हारे लिए, तुम्हारे बच्चों के लिए और दुनिया के हर इन्सान के लिए है।” प्रभु यीशु के चेले ने लम्बे समय तक बोलना जारी रखा और वह अपने सुननेवालों को मज़बूती से सिखाता रहा। उस दिन लगभग तीन हज़ार लोगों ने प्रभु यीशु के उस चेले की बातों पर विश्वास किया। वे बपतिस्मा (जल दिक्षा) लेकर सतसंग से जुड़ गए। वे प्रभु यीशु के करीबी चेलों से शिक्षा लेने लगे, और संगति करने लगे और उनके साथ प्रार्थना करने लगे। परमेश्वर हर दिन उनके संगति में और भी लोगों को जोड़ता गया।

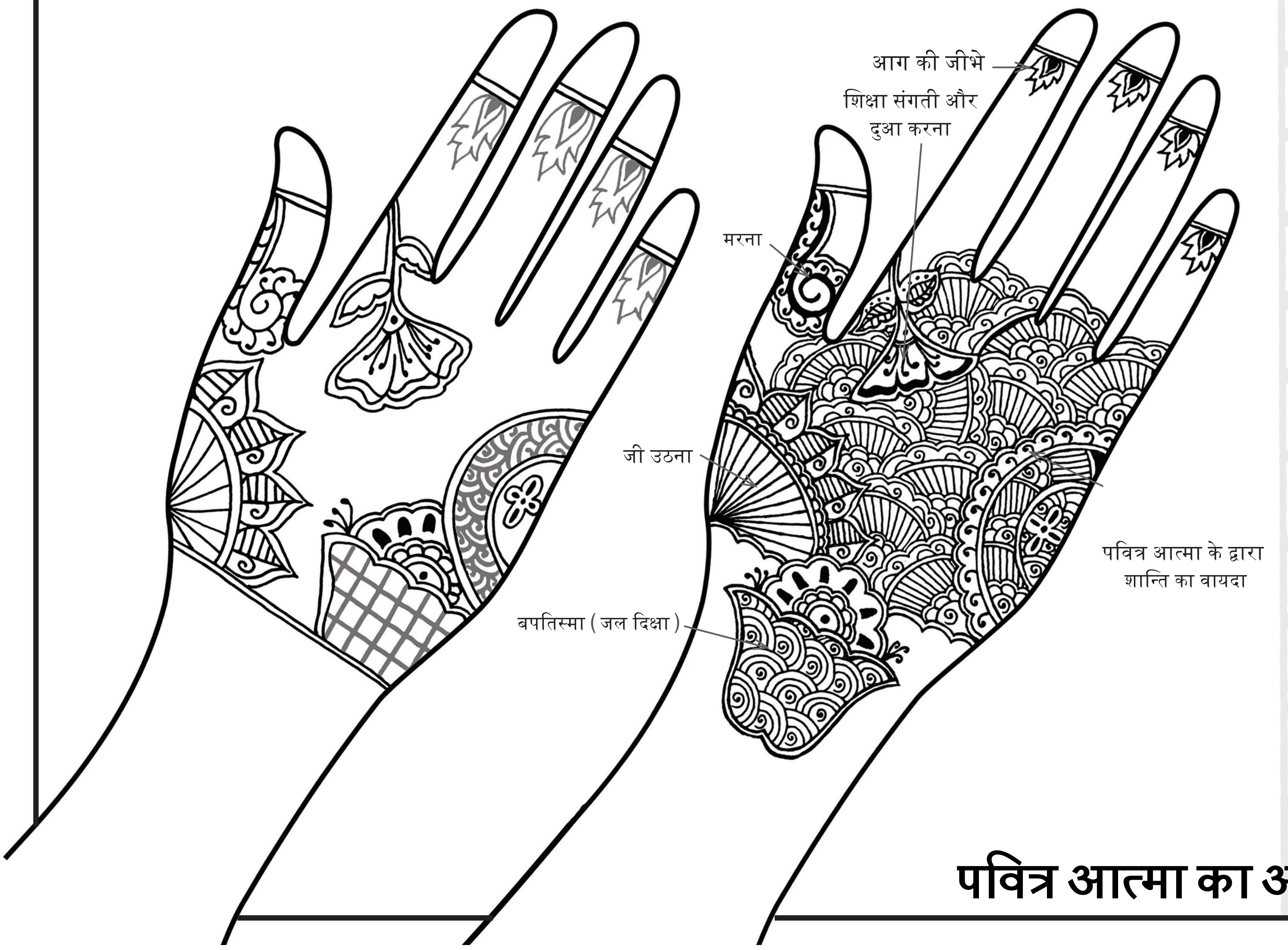
आग की जीभे
शिक्षा संगती और
दुआ करना
मरना
जी उठना
पवित्र आत्मा के द्वारा
शान्ति का वायदा
बपतिस्मा (जल दिक्षा)

पवित्र आत्मा का आना

कहानी
24

प्रभु यीशु के चेलों द्वारा शान्ति का काम

प्रभु यीशु के चेलों ने लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बताना जारी रखा। इन में से दो, पौलुस और सीलास ने जगह जगह जाकर लोगों को खुशखबरी सुनाई। इन यात्राओं के दौरान एक बार पौलुस और सीलास एक शहर में गए। प्रार्थना के दिन वह शहर से थोड़ा आगे चले गए। वे उस जगह के बारे में सोच रहे थे कि शायद लोग वहाँ प्रार्थना कर रहे होंगे। वहाँ जाकर वे कुछ औरतों से बातें करने के लिए नीचे बैठ गए। उनमें परमेश्वर को मानने वाली, लुदिया नाम की एक कपड़ों की व्यापारी थी। जैसे ही उसने उनकी बातों को सुना, परमेश्वर ने उसका दिल खोल दिया और उसने पौलुस की बातों को ग्रहण किया। लुदिया ने अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा (जल दिक्षा) लिया। पौलुस और सीलास कुछ दिनों तक इसी शहर में रहे।

इस शहर में एक गुलाम लड़की थी। उसमें एक बुरी आत्मा थी। वह लड़की बुरी आत्मा की वजह से लोगों का भविष्य बताकर अपने मालिकों के लिए पैसे कमाती थी। जब पौलुस और सीलास प्रार्थना करने वाली जगह जा रहे थे तब वह लड़की उन के पीछे आ के चिल्लाने लगी और कहने लगी कि, “ये लोग महान परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम्हें बताने आए हैं कि तुम्हें कैसे मुक्ति मिल सकती है।” ऐसा दिन-ब-दिन होता रहा। आख़िर में एक दिन पौलुस ने उसके अंदर की बुरी आत्मा से कहा, “मैं तुम्हें प्रभु यीशु के नाम से इस लड़की से बाहर निकलने का हुक्म देता हूँ।” उसी पल बुरी आत्मा उस लड़की को छोड़कर चली गई। उस लड़की के मालिकों के कमाने की उम्मीद अब ख़त्म हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने पौलुस और सीलास को अधिकारियों के सामने लाकर खड़ा कर दिया। उन्होंने अधिकारियों से चिल्लाकर कहा, “ये आदमी लोगों को हमारे रीति रिवाज़ों के खिलाफ काम करना सिखा रहे हैं।” बहुत जल्दी वहाँ लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। पौलुस और सीलास को पीटकर जेल में डाल दिया गया। दरोगा ने उन्हें ज़ंजीरों से बाँधकर तहखाने में डाल दिया।

आधी रात को पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे। वे भजन गा रहे थे और दूसरे कैदी सुन रहे थे। अचानक एक इतना बड़ा भूचाल आया कि जेल की नीव हिल गई। सारे दरवाजे खुल गए और सभी कैदियों की ज़ंजीरें टूट गई। जब दरोगा ने जागकर देखा कि सभी दरवाजे खुले हुए हैं, तब वह सोचने लगा कि सभी कैदी भाग चुके हैं। इसलिए उसने अपने आप को मारने के लिए तलवार निकाली। तब पौलुस ने उस से कहा, “रूक जाओ, अपने आप को मत मारो। हम सभी यहीं पर हैं।” दरोगा तहखाने की ओर भागा और पौलुस और सीलास के सामने गिरकर काँपने लगा। वह उनको बाहर ले आया और उन से पूछा, “मुक्ति पाने के लिए मुझे क्या करना होगा ?” उन्होंने जवाब दिया, “प्रभु यीशु पर विश्वास करो, फिर तुम्हें अपने पुरी परिवार के साथ मुक्ति मिल जाएगी।” पौलुस और सीलास ने उस दरोगा के घर में रह रहे हर इन्सान को प्रभु यीशु के बारे में खुशखबरी सुनाई। उन सभी ने तुरंत बपतिस्मा (जल दिक्षा) ले लिया। वे बहुत खुश थे, क्योंकि वे परमेश्वर पर विश्वास करने लगे थे। दूसरे दिन शहर के अधिकारियों ने पौलुस और सीलास को रिहा कर दिया। तब वे लुदिया के घर वापस जाकर विश्वासियों से मिले और उनका हौंसला बढ़ाया। फिर वे दूसरे शहर की तरफ निकल गए।

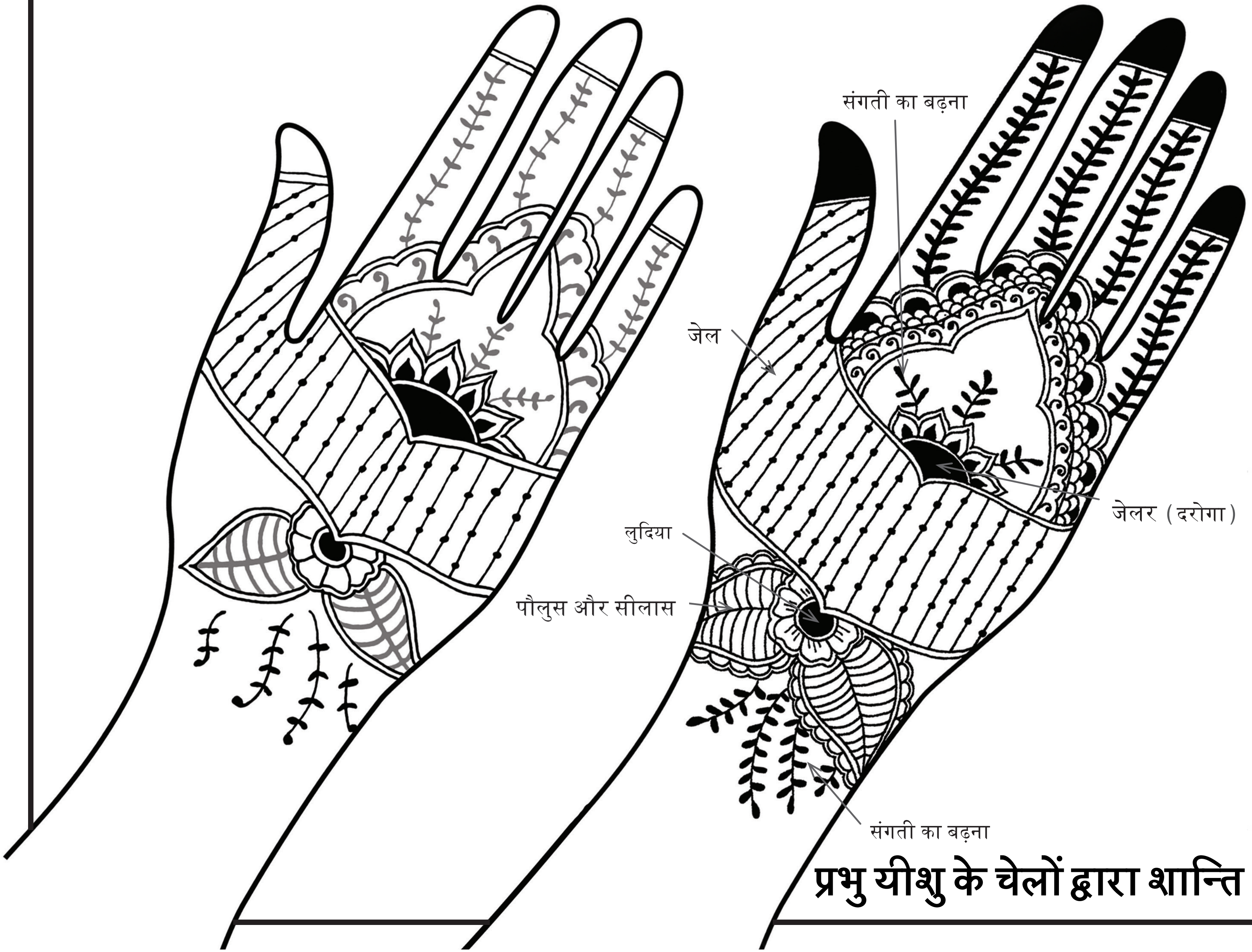

प्रभु यीशु के चेलों द्वारा शान्ति का काम

कहानी
25

यूहन्ना का दर्शन

जैसे ही विश्वासियों की गिनती बढ़ती गई वैसे ही विश्वासियों के विरोध में सताव भी बढ़ता गया। विश्वासी प्रभु यीशु के वापस आने के समय का इन्तज़ार करने लगे, जैसा कि प्रभु यीशु ने उन के साथ वायदा किया था। प्रभु यीशु के बहुत से करीबी चेलों को सताया गया, मार डाला गया और कुछ को दूर भेज दिया गया।

उनमें से यूहन्ना नाम के एक चेले को एक सुनसान टापू पर भेज दिया गया। वहाँ रहने के दौरान, परमेश्वर ने उसको एक बहुत खूबसूरत दर्शन दिया। ये दर्शन विश्वासियों के लिए आशा का एक संदेश था। यह दर्शन प्रभु यीशु के वापस आने और इस संसार के अन्त का था। इस दर्शन में यूहन्ना ने एक बहुत बड़ी भीड़ को देखा, जिसमें हर भाषा, हर कुल, हर जाति और हर देश के लोग थे। इस दर्शन में उस ने देखा कि प्रभु यीशु ने हम सभी को दु:खों से बचा लिया। इस दर्शन में यूहन्ना ने प्रभु यीशु को सफेद घोड़े पर सवार होकर आते देखा। प्रभु यीशु के लिबास पर “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु” लिखा हुआ था। प्रभु यीशु ने दुश्मनो को हराया और बुराई पर जीत प्राप्त की।

कुछ समय के बाद यूहन्ना ने पुराने आकाश और धरती को ख़त्म होते हुए देखा। यूहन्ना ने देखा कि परमेश्वर नई धरती और नये आकाश को बना चुके है। उसने एक नया और खूबसूरत शहर देखा, जो शुद्ध सोने और अनमोल पत्थरों से बना हुआ है। यह वह शहर है जहाँ प्रभु यीशु को मानने वाले लोग रहेंगे। फिर यूहन्ना ने एक आवाज़ सुनी, “देखो, परमेश्वर का घर अब उसके लोगों के बीच है। वे लोग परमेश्वर के लोग होंगे, और परमेश्वर उनके साथ रहेगा। परमेश्वर उनकी आँखो से हर आँसू को पोंछ डालेगा। दुबारा कोई न मरेगा, न उदास होगा, न रोएगा और न ही किसी को कोई तकलीफ होगी।” परमेश्वर ने कहा, “मैं सब कुछ नया बना रहा हूँ और मेरी तैयारियाँ ख़त्म हो चुकी हैं। मैं ही सब कुछ शुरू और ख़त्म करता हूँ।”

कहानी
25

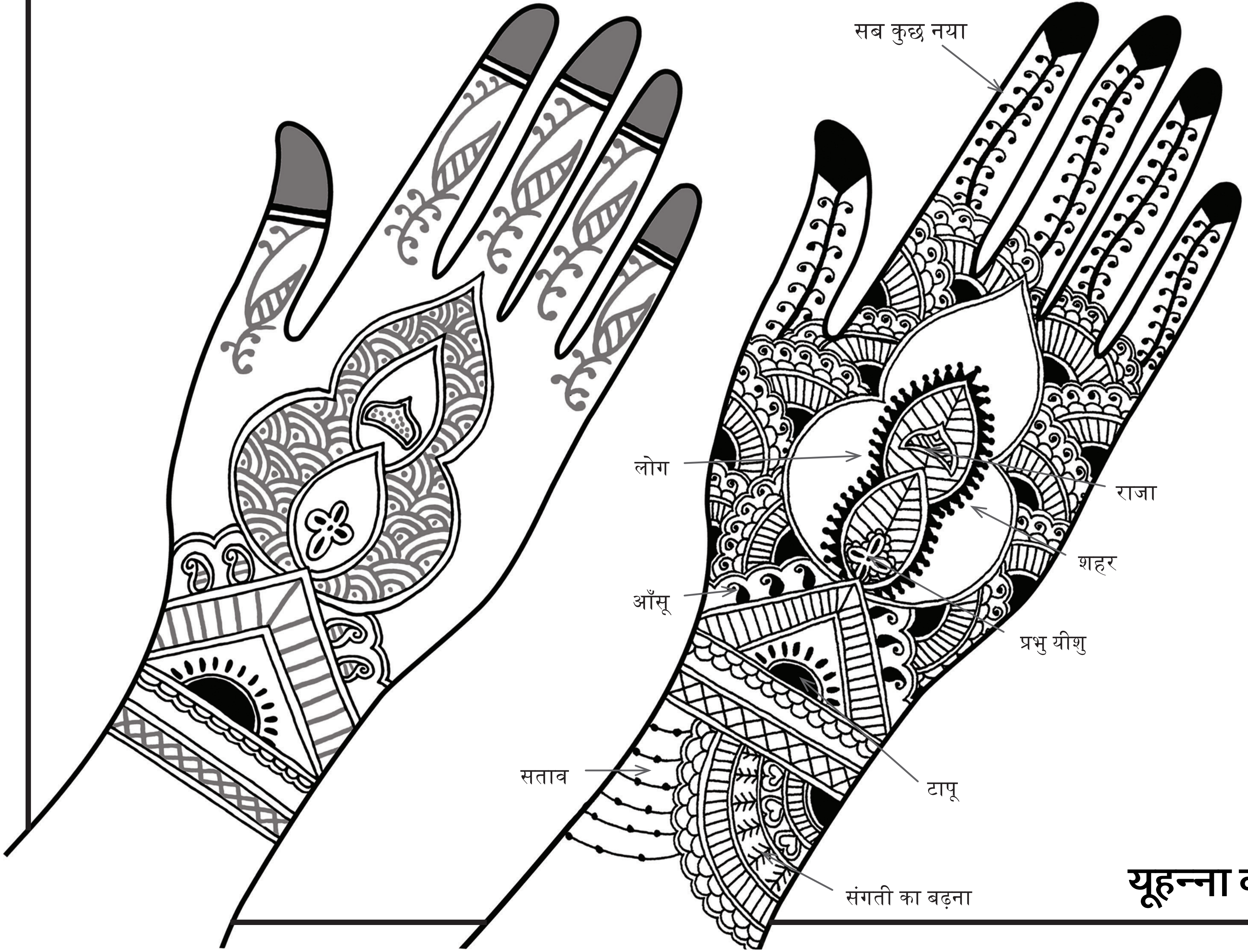

यूहन्ना का दर्शन

कहानी
26

प्रभु यीशु का इस धरती पर दुबारा वापस आना

एक दिन प्रभु यीशु राजा की तरह वापस आएंगे। जब वह आएंगे, तब प्रभु यीशु उन सब लोगों को अपने साथ रहने के लिए बुलाएंगे जो उन पर विश्वास करते है। ताकि वह सब लोग आनन्द और शान्ति से प्रभु यीशु के साथ रह सके। प्रभु यीशु के पीछे चलना या उनके बताए गए रास्ते पर चलना इतना आसान नहीं है। जैसे कि हमने इन कहानियों में सीखा कि बहुत सारे लोग प्रभु यीशु के बताए गए रास्ते पर नहीं चलते। क्योंकि वह रास्ता तंग और मुश्किल है। मगर वह रास्ता जीवन की तरफ जाता है। ज्यादातर लोग आसान रास्ते को ही चुनते है। मगर यह आसान और खुला रास्ता नाश की तरफ जाता है।

हम इस तंग रास्ते पर कैसे चलें ? प्रभु यीशु के चेलों ने भी उसकी मौत होने से पहले की रात को उससे यही सवाल पूछा था। प्रभु यीशु ने उनको बताया कि “मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी परमेश्वर के पास नहीं जा सकता।”

प्रभु यीशु जीवन की तरफ जाने वाले उस तंग रास्ते पर हमें कभी भी अकेला नहीं छोड़ते। जिस रात प्रभु यीशु को पकड़वाया जाना था प्रभु यीशु ने हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमारे साथ एक वायदा किया। वह वायदा था कि प्रभु यीशु हमारा मार्गदर्शन के लिए हमें परमेश्वर की आत्मा देंगे। उसने कहा, “मैं तुम्हारे लिए एक तोहफ़ा छोड़ रहा हूँ, यह तोहफ़ा मन की शान्ति है। जो शान्ति मैं तुम्हें दे रहा हूँ, यह संसार कभी भी तुम्हें नहीं दे सकता। इसलिए डरो मत, क्योंकि मैंने इस संसार को जीत लिया है। याद रखो मैं तुम्हारे लिए वापस आऊँगा।”

प्रभु यीशु कहते है कि “अगर कोई अपने पापों की माफ़ी मांगकर सिर्फ परमेश्वर के पीछे ही चले तो वह जीवन और शान्ति पाएगा।”

परमेश्वर के पास जाने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता है और वह रास्ता है “प्रभु यीशु।”

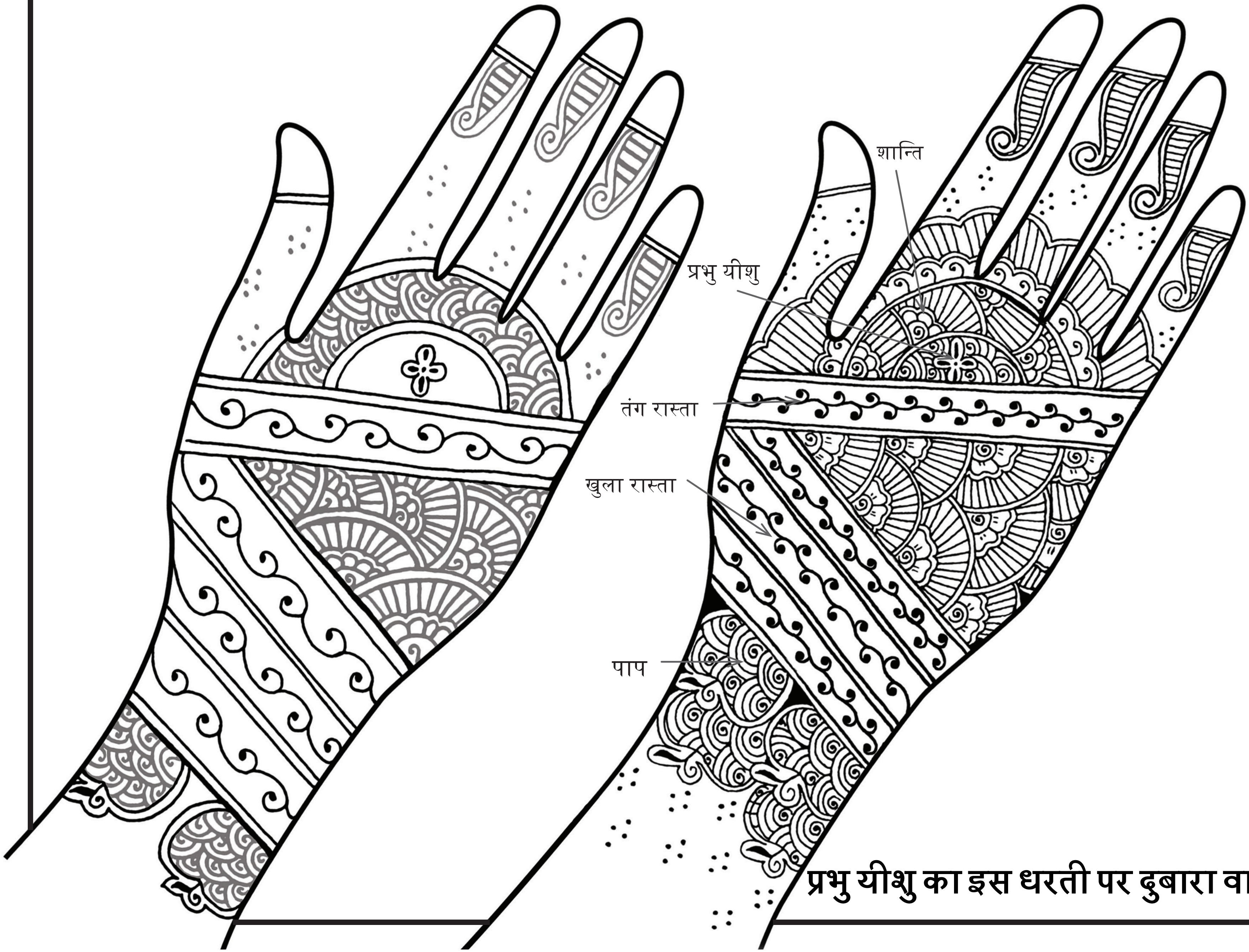

प्रभु यीशु का इस धरती पर दुबारा वापस आना

कहानी
27

संसार की रचना से, यीशु के वापस आने तक की कहानी

शुरूआत में केवल परमेश्वर ही थे। परमेश्वर के बोलने से ही सारा संसार और जो कुछ भी इसमें है सब कुछ बना। तब परमेश्वर ने अपनी सबसे ख़ास चीज़ को बनाया वह इन्सान था। परमेश्वर ने आदमी और औरत को बनाया। परमेश्वर का रिश्ता इन्सान के साथ बहुत अच्छा था, और वे एक सुन्दर बगीचें में परमेश्वर के साथ शान्ति से रहते थे। एक दिन आदमी और औरत ने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी, और उनका रिश्ता परमेश्वर से टूट गया। वे परमेश्वर से अलग हो गए और परमेश्वर ने उन्हें सुन्दर बगीचे में से निकाल दिया।

फिर आदमी और औरत के बच्चे हुए, और उनके बच्चों के बच्चे हुए। लेकिन उनके दिलों में बुराई थी। वे भी परमेश्वर से अलग बने रहे। पर फिर भी परमेश्वर अपना रिश्ता इन्सान के साथ जोड़ना चाहते थे। एक दिन परमेश्वर ने एक आदमी को चुना जिसका नाम इब्राहीम था। परमेश्वर ने उस से कहा कि "मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। मैं उस जाति के द्वारा पूरी दुनिया को आशीष दूगाँ।" इब्राहीम के विश्वास के कारण ही परमेश्वर का रिश्ता इब्राहीम के साथ बहुत अच्छा था। परमेश्वर ने अपने वायदे के अनुसार इब्राहीम और उसके लोगों को एक बड़ी जाति बनाया।

परन्तु फिर भी इब्राहीम की सन्तान के लोगों ने बुराई करनी जारी रखी और परमेश्वर से दूर बने रहे। इसलिए परमेश्वर ने उन के लिए अपने पैगंबरों को भेजा ताकि वे लोगों को बता सकें कि वे अपना रिश्ता परमेश्वर के साथ ठीक करें और शान्ति से ज़िन्दगी जीएँ। उनमें से एक पैगंबर का नाम यशायाह था। यशायाह ने इब्राहीम की सन्तान को आशा का यह संदेश सुनाया कि "एक मुक्तिदाता इस धरती पर आएगा। वह हमारे पापों के कारण मारा जाएगा और तीसरे दिन मुरदो में से जी उठेगा। उस के कारण आप सब का रिश्ता परमेश्वर के साथ ठीक हो जाएगा वह शान्ति का राज कुमार कहलाएगा। उस समय के बाद इब्राहीम की सन्तान ने वायदा किए हुए मुक्तिदाता का इन्तज़ार करना शुरू कर दिया।

फिर परमेश्वर अपने वायदे को पूरा किया। परमेश्वर ने प्रभु यीशु को बचाने वाले के रूप में इस धरती पर भेज दिया। प्रभु यीशु ने इस धरती पर रहते हुए बहुत सारी अदभुत काम किये। उसने लोगों को शान्ति दी, लोगों को रोगों से चंगाई दी और बुरी आत्माओं को निकाला। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को बताया कि वह उन्हें परमेश्वर के साथ हमेशा की ज़िन्दगी दे सकता है। इन बातों को सुनकर जो लोग प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करते थे वह प्रभु यीशु से गुस्सा हो गए। उन्होंने सरकार से यह मनवा लिया कि प्रभु यीशु को मार डाला जाए। उन्होंने प्रभु यीशु को पकड़ा, कोड़े मारे, और उसको सलीब पर मार डाला। लेकिन प्रभु यीशु तीसरे दिन मुरदों में से ज़िन्दा हो गया। वह अपने पीछे चेलने वालों को दिखाई दिया। उसने अपने चेलों को बताय कि वह मौत को हरा कर ज़िन्दा हो गया है। उसने कहा, "मैं तुम्हें छोड़कर जल्दी चला जाऊँगा, पर मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर की आत्मा भेजूँगा। जब तुम परमेश्वर की आत्मा पाओगे तो परमेश्वर तुम्हे शक्ति देगा। इसलिए तुम उस शक्ति को पाना और पूरे संसार के लोगों को मेरे बारे में बताना।

जब वे लोग मुझ पर विश्वास करेंगे तो तुम उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा (जल दिक्षा) देना। जो बातें मैंने तुम्हे सिखाई है वे उन सब लोगों को सिखाना।" एक दिन प्रभु यीशु सब को छोड़ कर उनकी आँखों के सामने बादलों पर उठा लिये गए। जब यह सब कुछ चेले देख ही रहे थे कि दो फ़रिश्ते वहाँ प्रगट हुए और उन से पूछने लगे कि "तुम आसमान की तरफ क्यों देख रहे हो ? प्रभु यीशु जैसे धरती से गए है वैसे ही एक दिन इस धरती पर वापस आएँगे।" इस समय के बाद प्रभु यीशु के चेले यीशु के वापस आने का इन्तज़ार करने लगे। और वे जगह-जगह जाकर लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बताने लगे। जब लोग प्रभु यीशु पर विश्वास करते थे तो वह लोगों को बपतिस्मा (जल दिक्षा) देते थे। वे पानी के नीचे जाते जो की निशान था पापों से मुड़कर परमेश्वर की तरफ जाना और प्रभु यीशु पर विश्वास करना।

यह सब कुछ आज भी प्रभु यीशु के चेले करते है। वह सबको प्रभु यीशु के बारे में बताते है। जब लोग प्रभु यीशु पर विश्वास करते है। वे बपतिस्मा (जल दिक्षा) देते है जो निशान है पानी में अपने आप को साफ करना और यह बताना की हम अपने पापों से मुड़कर परमेश्वर की तरफ है और हम प्रभु यीशु पर विश्वास करते है। प्रभु यीशु के चेले इकट्ठे मिलकर परमेश्वर की आराधना करते है। प्रभु यीशु के बारे में सिखते है और एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करते है। वे प्रभु यीशु के आने का इन्तज़ार करते है की एक दिन शान्ति का राजकुमार वापस आएगा। जब वे आएगा तो बहुत बड़ा जश्न होगा और वह हमें अपने साथ हमेशा रहने के लिए ले जाएगा। फिर आँसू, दु:ख और कलेश ख़त्म हो जाएँगे।

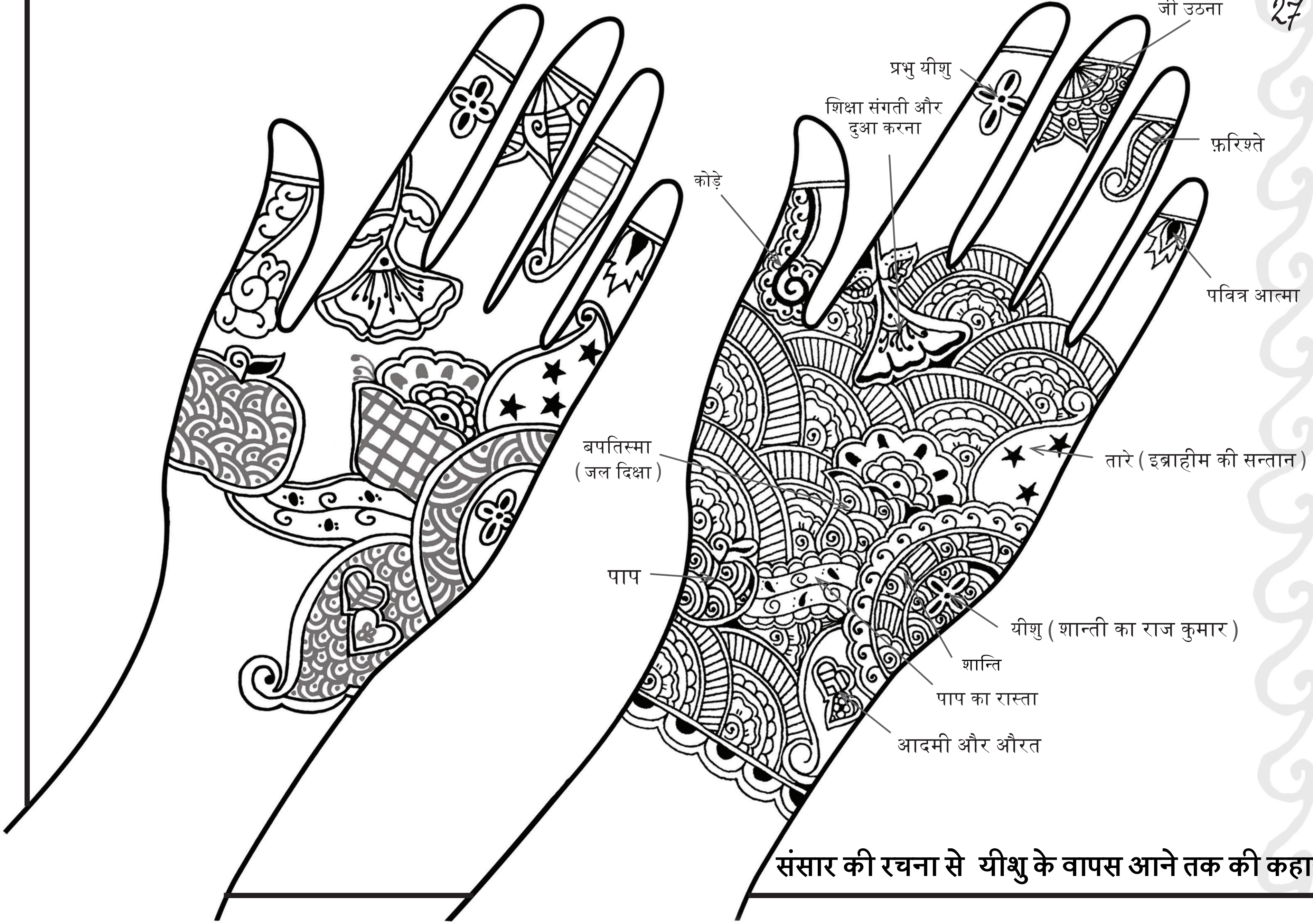

संसार की रचना से यीशु के वापस आने तक की कहानी